

SACHCHA RAHI • ISSN 2582-4007 • VOL 25 • ISSUE 01 • MARCH 2026

हिन्दी मासिक

मार्च 2026

सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक

लखनऊ

इस्लामी मदरसे रोशनी के मीनार

मदरसों की बड़ी क़द्र की ज़रूरत है, ये रोशनी के मीनार हैं, अगर ये न रहेंगे तो अंधेरा ही अंधेरा होगा तब कोई बताने वाला न होगा कि अल्लाह तआला किस बात से राज़ी होता है, किस बात से नाराज़ होता है ? और किस बात पर पकड़ होगी ? किस बात पर पकड़ न होगी ? इसका बताने वाला कोई नहीं रह जाएगा, इसलिए ये मदरसे चाहे देखने में कितने ही मामूली मालूम होते हों लेकिन ये बहुत अहम है । (हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद रावे हसनी नदवी रह.)

एक प्रति ₹ 40/=

वार्षिक ₹ 400/=



सरपरस्त
इज़रत मौलाना शे0 बिलाल अब्दुल हई
इसनी नदवी
नाज़िम नदवतुल उलमा, लखनऊ

सम्पादक
मु0 गुफ़रान नदवी
उप सम्पादक
जमाल अहमद नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ - 226007
समय: (8:00 am to 1:00 pm)
Whats'app & Call:
Mob. 9559844716
E-mail:sachcharahi@nadwa.in
https://sachcha-rahi.nadwa.in/

सहयोग राशि

एक प्रति ₹ 40/-

वार्षिक ₹ 400/-

विदेशों में (वार्षिक) 60 युएस. डॉलर

चेक / ड्राफ्ट पर यह लिखें
SACCHA RAHI

SACCHA RAHI

A/c. No. 10863759642

IFS Code: SBIN000125

Swift Code: SBINNB157

State Bank of India,
Main Branch, Lucknow.

कृपया पैसा जमा करने के बाद दफ़्तर
के फोन नम्बर अथवा ई-मेल पर
खरीदारी नम्बर के साथ अवश्य
सूचित करें।

हिन्दी मासिक

सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक
SACHCHA RAHI.ISSN 2582-4007

लखनऊ

मार्च 2026

वर्ष 25

अंक 01



ईद का दिन



ईद के तड़के ही से फरिश्ते
यह आवाज़ लगाने लगते हैं कि
लोगो! नमाज़ को चलो और
इबादत को आमादा हो, ईद का
दिन अगरचे खाने पीने और खुशी
मनाने का दिन है लेकिन हकीकत
में ईद का दिन जाँच-पड़ताल और
महीने भर के हिसाब किताब का
दिन है, खुश नसीब हैं वह जिस
का खाता आज नेकियों और
ताअतों से लबरेज़ नज़र आए।
(मौलाना अब्दुल माजिद दरयाबादी रह0)



आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली
लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप
जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। आप अपना पैसा दिये गये बैंक खाते
में भी जमा कर सकते हैं। अथवा मनीआर्डर से भी भेज सकते हैं। मनीआर्डर
के कूपन पर अपने खरीदारी नम्बर के साथ मोबाइल नम्बर अवश्य लिखें।

विषय एक दृष्टि में

कुरआन की शिक्षा.....	मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी	05
प्यारे नबी की प्यारी बातें	मौलाना हकीम सै० अब्दुल हई हसनी रह०	07
रमज़ान का महीना और ईदुल फित्र	मुहम्मद गुफ़रान नदवी	08
उलमा व मस्जिद के इमामों.....	मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी	12
भारत के अतीत में मुस्लिम.....	सैयद सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान	15
समाज की बुराईयाँ.....	मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी	17
रोज़ा कहेँ या उपवास	इं० जावेद इक़बाल	19
समान सिविल कोड	हज़रत मौ० सै० मु० राबे हसनी नदवी रह०	22
ऐलाने मिलिकियत.....	इदारा	25
ईद-भाईचारे का त्योहार.....	डॉ० नजमुस्साकिब अब्बासी नदवी	26
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़ती मुहम्मद ज़फ़र आलम नदवी	28
रमज़ानुल मुबारक का सबक.....	सैय्यद सुफ़यान अहमद नदवी लखनवी	31
सेहत का राज़ (पद्य).....	अब्दुल रशीद सिद्दीकी नसीराबादी	33
रमज़ान का अन्तिम दहा	डॉ० हारून रशीद सिद्दीकी रह०	34
ज़कात की समाज में अहमियत.....	मुहम्मद इक़बाल नदवी	35
कारख़ाने का चक्कर.....	मायल ख़ैराबादी	37
स्वास्थ्य.....	वैद्य वी०एस० पाण्डेय	40
अंतर्राष्ट्रीय समाचार.....	अबू अब्दुर्रहमान नदवी	41
अहले ख़ैर हज़रात से.....	इदारा	42

कुरआन की शिक्षा

मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सूर-ए-बनी इस्राईल:-

अनुवाद:-

जिस दिन वह तुम्हें पुकारेगा तो तुम उसकी प्रशंसा करते चले आओगे और तुम अटकल लगाओगे कि बहुत कम तुम्हारा (दुनिया में) ठहरना हुआ(52) और मेरे बन्दों से कह दीजिए वे वही बात कहें जो बेहतर हो, बेशक शैतान उनके बीच फूट डालता रहता है, निश्चित रूप से शैतान इनसान का खुला दुश्मन है⁽¹⁾(53) तुम्हारा पालनहार तुमसे खूब अवगत है अगर चाहेगा तो तुम पर दया करेगा, और चाहेगा तो अजाब देगा और आपको हमने उन पर दारोगा बना कर नहीं भेजा⁽²⁾(54) और आसमानों और जमीन में जो कोई भी है आपका पालनहार उसको खूब जानता है और हमने कुछ नबियों को कुछ दूसरों पर बड़ाई प्रदान की है और हमने दाऊद को जबूर दी(55) कह दीजिए कि उसके अलावा जिसको तुम (पूज्य) समझते हो उसको पुकारो तो न वे तुमसे तकलीफ दूर कर सकते हैं और न कोई परिवर्तन पैदा कर सकते हैं(56) यह लोग जिनको वे पुकारते हैं वे खुद अपने

पालनहार तक पहुंचने का वसीला (साधन) ढूंढते रहते हैं कि कौन ज्यादा करीब हो जाए और उसकी कृपा के आशावान रहते हैं और उसके अजाब से डरते रहते हैं बेशक आपके पालनहार का अजाब (दण्ड) डरने ही की चीज़ है⁽³⁾(57) और कोई बस्ती ऐसी नहीं है जिसको हम क़यामत के दिन से पहले नष्ट न कर डालें या कठोर दण्ड में न ग्रस्त करें, यह किताब में लिखा हुआ है⁽⁴⁾(58) और हमारे लिए रूकावट ही क्या थी हम निशानियाँ भेज ही देते मगर पहले भी लोग उनको झुठला ही चुके और समूद को हमने एक खुली (निशानी के) रूप में ऊँटनी प्रदान की तो उसके साथ भी उन्होंने अन्याय किया और निशानियाँ तो हम डराने ही के लिए भेजते हैं⁽⁵⁾(59) और जब हमने आपसे कहा कि आपका पालनहार लोगों को घेरे में ले चुका है और आपको जो कुछ हमने दिखाया वह हमने लोगों की परीक्षा के लिए ही दिखाया और उस पेड़ को भी (परीक्षा बना दिया) जिसको कुरआन में मलऊन (तिरस्कृत) बताया गया है और हम उनको डराते हैं तो उनकी

सरकशी बढ़ती ही जाती है(60) और जब हमने फरिश्तों से कहा कि आदम को सज्दा करो तो वे सब सज्दे में गिर गए सिवाए इब्लीस के, वह बोला क्या मैं उसको सज्दा करूँ जिसे तूने मिट्टी से पैदा किया(61) कहने लगा भला बताइये क्या यही वह (सृष्टि) है जिसे तूने मुझ पर बड़ाई दी, अगर तूने मुझे क़यामत तक के लिए मोहलत दे दी तो मैं उसकी संतान को सिवाय कुछ के अपने नियंत्रण में करके रहूँगा⁽⁶⁾(62) कहा जा फिर उनमें से जो भी तेरी राह पर चलेगा तो दोजख में तुम सबकी सजा है भरपूर सजा(63) और अपनी आवाज से जिनको फुसला सके फुसला और उन पर अपने घुड़सवार और पैदल सेना भी चढ़ा ला और उनके मालों और संतान में जाकर हिस्सा लगा और उनसे (खूब) वादे कर, और शैतान जो भी उनसे वादे करता है वह धोखा ही धोखा है⁽⁷⁾(64) रहे मेरे खास बंदे⁽⁸⁾ तो उन पर तेरा कुछ बस न चलेगा और आप का पालनहार काम बनाने के लिए काफी है(65) तुम्हारा वह पालनहार जो तुम्हारे लिए समुद्र में नाव चीरता ले चलता है

ताकि तुम उसकी कृपा प्राप्त करो, बेशक वह तुम पर बहुत दयालु है(66) और जब समुद्र में तुम पर मुसीबत आती है तो सिवाय उस जात के जिसको भी तुम पुकारते हो सब गुम हो जाते हैं फिर जब वह तुम्हें बचा कर सूखे में ले आता है तो फिर तुम मुँह मोड़ते हो और इंसान बहुत ही नाशुक्रा (कृतघ्न) है(67) भला क्या तुम्हें इस बात का डर नहीं रहा कि वह सूखे ही के भाग में तुम्हें धंसा दे या तुम पर कंकड़ियों भरी आंधी भेज दे, फिर तुम अपने लिए कोई काम बनाने वाला न पा सको(68) या तुम इससे निश्चिन्त हो गये कि वह दोबारा तुम्हें वहीं (समुद्र में) ले जाए तो तुम पर उखाड़ फेंकने वाली तेज हवा भेज दे बस तुम्हें तुम्हारी नाशुक्री (कृतघ्नता) के बदले में डुबो दे फिर तुम्हें कोई हमारा पीछा करने वाला भी न मिले⁽⁹⁾(69)।

तफ़सीर (व्याख्या):—

1. इसमें ईमान वालों को ताकीद है कि वे कभी गुस्से में न आएँ और काफिरों से भी अच्छे ढंग से बात करें वरना बात बनने के बजाए बिगड़ती है।

2. यानी आपका काम पहुँचा देना है, सत्य मार्ग पर ले आना नहीं।

3. जिन्नात और फरिश्ते जिनको मुश्रिक पूजते थे, उन

लोगों के बारे में कहा जा रहा है कि वे खुद अल्लाह की निकटता की खोज में और इबादत व बन्दगी में लगे रहते हैं, वसीले से तात्पर्य अल्लाह से करीब होने का रास्ता है।

4. अगर विरोधियों और काफिरों की बस्ती है तो वह अजाब का शिकार हो कर रहेगी और अगर विरोधियों की बस्ती नहीं है तो क्यामत से पहले पहले सबको समाप्त होना ही है।

5. मांगी हुई निशानियाँ आने के बाद अगर कोई कौम ईमान नहीं लाती तो वह तबाह हो जाती है, मुश्रिक लोग जिन निशानियों की मांग कर रहे थे उनकी ओर इशारा है कि वह इसलिए नहीं दिखाई जा रही हैं कि उसके बाद न मानने के कारण आम बर्बादी है और इस उम्मत के बारे में अल्लाह का फैसला है कि इस पर आम अजाब नहीं आएगा, फिर आगे दो निशानियों का वर्णन है, एक मेराज का जिसके विषय में मुश्रिकों ने अपने संतोष के लिए दो प्रश्न भी किये और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सारे उत्तर दिये लेकिन इसके बावजूद उन्होंने न माना, दूसरे जक्कूम पेड़ के बारे में कहा गया कि वह आग में पैदा होता है तो मुश्रिकों ने हंसी उड़ाई, यह न सोचा कि जिस शक्ति ने आग

पैदा की है अगर वह उसी में कोई ऐसा पेड़ पैदा कर दे जिसके गुण साधारण पेड़ों से अलग हों तो भला इसमें आश्चर्य की क्या बात है ?

6. “इह तनक” का अर्थ लगाम देना भी है और पूर्ण रूप से उखाड़ फेंकना भी है।

7. आवाज़ से बहकाने का मतलब गाने-बजाने जैसी वह शैतानी आवाज़ें जो इंसान को ग़लत रास्ते पर डाल देती हैं, आयत में शैतानी सेना का उल्लेख है जिसमें उसकी संतान के अलावा बुरे जिन्नात और इन्सान भी शामिल हो जाते हैं, इसमें यह भी संकेत है कि जो लोग अपना धन ग़लत खर्च करते हैं वह शैतान का हिस्सा बनता है।

8. यानी आज्ञाकारी बंदे।

9. उसी अल्लाह ने तुम्हारे लिए समुद्र और नदियाँ बनाई तो उसमें यात्रा करते हो और उससे फ़ायदा उठाते हो, फिर जब कभी तूफ़ान में घिर जाते हो तो उसी एक खुदा को पुकारते हो, फिर जब वह बचा लेता है तो तुम दोबारा उसके साथ दूसरों को साझी ठहराने लगते हो, जिस अल्लाह ने बचाया, क्या तुम्हें अब इसका डर नहीं रहा कि वह तुम्हें दोबारा तबाह कर दे, फिर उसके बाद कौन तुम्हारी सहायता कर सकता है ?



प्यारे नबी की प्यारी बातें

मौ० हकीम सै० अब्दुल हई हसनी रह०

जहाँ कुरआन न पढ़ा जाए

वह घर कब्रिस्तान है

क़यामत में कुरआन की सिफारिश और वकालत:—

हजरत अबू उमामा बाहिली रज़ि० बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० से मैंने सुना है कि आप सल्ल० फरमा रहे थे कुरआन पढ़ा करो, वह क़यामत के दिन अपने पढ़ने वालों का शफीअ (अनुशंसक) बनकर आएगा, विशेषकर) जहरावैन अर्थात “अल बकरः, सूरः आले इमरान” पढ़ा करो, क्योंकि यह दोनों सूरतें क़यामत के दिन अपने पढ़ने वालों को अपने साये में लिए इस तरह आएंगी जैसे कि वो बादल के दो टुकड़े हैं, या सायेबान हैं, या कतार में चिड़ियों के जत्थे हैं, ये दोनों सूरतें क़यामत के दिन अपने पढ़ने वालों की तरफ से (उनके बचाने के लिए) वकालत करेंगीं। आप सल्ल० ने फरमाया: सूरः बकरः पढ़ा करो क्योंकि इसको हासिल करना बड़ी बरकत वाली बात है और इसको छोड़ना बड़ी हसरत और खेद

की बात है। और नाफरमान लोग इसकी ताकत नहीं रखते।

(मुस्लिम)

सूरः कहफ की शुरु की दस आयतें:—

हजरत अबू दर्दा रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फरमाया— जिसने सूरः कहफ की शुरु की दस आयतें याद कर लीं. वह दज्जाल के फितने (आजमाइश/परीक्षा) से सुरक्षित रहेगा, और एक हदीस में है कि सूरः कहफ की आखिरी दस आयतें। (मुस्लिम)

कुरआन मजीद पढ़ने से सकीनत (अल्लाह की खास रहमत) का उतरना:—

हजरत बराअ बिन आजिब (रज़ि०) से रिवायत है कि एक आदमी सूरः कहफ पढ़ता था, उसके पास एक घोड़ा दो रस्सियों से बँधा था, बस एकदम से उसको एक बादल ने ढाँप लिया और वह बादल जितना नजदीक होता जाता था, घोड़ा उसको देखकर कूदने और भागने लगता था, जब सुबह हुई तो उस आदमी ने अल्लाह के रसूल सल्ल० के पास आकर इसका

जिक्र किया। आप सल्ल० ने फरमाया: वह सकीनः था जो कुरआन मजीद के कारण उतरा था। (बुखारी व मुस्लिम)

सूरः फत्ह की श्रेष्ठता:—

हजरत उमर बिन अल-खत्ताब रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फरमाया रात मुझ पर ऐसी सूरः उतरी हैं जो दुनिया की तमाम चीजों से ज़्यादा मुझको पसन्दीदा है, फिर आप सल्ल० ने “इन्ना फतहल क फत्हम्मुबीना” पढ़ी। (बुखारी)

सूरः मुल्क:—

हजरत अबू हुरैरः रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फरमाया: कुरआन शरीफ में एक सूरः तीस आयत की है, उसने अपने पढ़ने वालों के लिए ऐसी शफाअत (अनुशंसा) की कि वह बख़्श ही दिया गया, वह “तबा रकल्लजी बि यदिहिल मुल्क” है।

(अबू दाऊद व तिर्मिजी)

सूरः इख्लास:—

हजरत अबू सईद खुदरी रज़ि० से रिवायत है कि एक आदमी

शेष पृष्ठ ..18.....पर

रमज़ान का महीना और ईदुल फ़ित्र

मुहम्मद गुफ़रान नदवी

सच्चा राही के “फरवरी” के अंक में आपने रमज़ान के विषय में विस्तार पूर्वक पढ़ा होगा कि रमज़ान कितना ख़ैर व बरकत वाला महीना है इस महीने में रात दिन अल्लाह की रहमतें बरसती हैं, ये इन्सान पर निर्भर है कि वह साहस और परिश्रम से पूरा फायदा उठा ले और अपने नामे आमाल को नेकियों से भरले, साल के बारह महीनों में जो फ़ज़ीलत और अहमियत और कीमत रमज़ान के महीने की है वह किसी और महीने की नहीं है। अल्लाह के प्यारे नबी हज़रत मुहम्मद सल्ल० न फ़रमाया:— “अगर लागों को ये मालूम हो जाए कि रमज़ान क्या चीज़ है? तो मेरी उम्मत यह तमन्ना करे कि पूरा साल रमज़ान ही हो जाए” अगर्चि पूर साल रोज़ा रखना कठिन काम है, लेकिन अल्लाह के रसूल सल्ल० ने ये बात रमज़ानुल मुबारक के सवाब के मुक़ाबले में फ़रमाई कि लोग इसकी तमन्ना करने लगें।

रमज़ान की फ़ज़ीलत और श्रेष्ठता का अनुमान इससे लगाइये कि साधारण दिनों में अल्लाह को राज़ी करने के लिए

जो अच्छे और नेक काम किए जाते हैं यदि वह काम रमज़ान में किए जाएं तो उन कामों का सवाब फ़र्ज़ कामों के सवाब के बराबर होता है और फ़र्ज़ कामों का सवाब सत्तर गुना बढ़ा दिया जाता है, रमज़ान के महीने में हर नेक और अच्छे काम की कीमत बढ़ जाती है, रोज़ा तरावीह कुरआन की तिलावत की वजह से रमज़ान एक इबादत का मौसम बन जाता है और इन्सान के अन्दर नेक और अच्छे कामों के करने की भावना पैदा हो जाती है, अल्लाह तआला का हज़रत मुहम्मद सल्ल० की उम्मत के साथ विशेष करुणा और दया का मुआमला है, कि उसने रमज़ान शरीफ़ के आखिरी अशरे में “लैलतुल क़द्र” की मुबारक और कीमती रात अता फ़रमाई, यदि उस मुबारक रात में कोई मोमिन बन्दा इबादत करता है तो गोया उसने तिरासी वर्ष चार माह इबादत की, खुश किस्मत हैं वह बन्दे जिनको यह रात नसीब हो जाए, अल्लाह तआला ने इस मुबारक रात का ज़िक्र कुरआन के तीसवें पारे की सूर: अल क़द्र में किया है।

अनुवाद:— “बेशक हमने उस (कुरआन) को शबे क़द्र में उतारा है (लौहे महफूज़ से पहले आसमान पर इसी रात में उतारा गया और दुनिया में भी इसी रात उतरना शुरू हुआ) आपको मालूम भी है कि शबे क़द्र क्या चीज़ है, शबे क़द्र हज़ार महीनों से बेहतर है, उसमें फ़रिश्ते और रुहुल (अमीन) सारे मुआमलात लेकर अपने पालनहार के आदेश से उतरते हैं (अल्लाह तआला की ओर से साल भर के मुआमलात इसी रात में फ़रिश्तों के हवाले होते हैं कि वे अपने-अपने समय पर पूरा करते रहें, वे इन मुआमलात को लेकर इस रात में उतरते हैं और जो लोग इबादत में लीन होते हैं उनके लिए रहमत की दुआएं करते हैं) वह सर्वथा सलामती है, यही सिलसिला सुबह के निकलने तक रहता है”।

नबी करीम सल्ल० का इरशाद है जो शख्स लैलतुल क़द्र में ईमान के साथ और सवाब की नियत से इबादत के लिए खड़ा हुआ उसके पिछले तमाम गुनाह मुआफ़ कर दिए जाते हैं।

खड़ा होने का मतलब यह है कि नमाज़ पढ़े और इसी हुक्म में यह भी है कि किसी और इबादत तिलावते कुरआन और ज़िक्र आदि में व्यस्त हो और सवाब की उम्मीद रखने का मतलब यह है कि दिखावा न हो और किसी बुरी नियत से न हो बल्कि इखलास के साथ केवल अल्लाह को खुश करने के लिए और सवाब को प्राप्त करने की नियत से खड़ा हो, कोई दुनियावी ग़रज़ न हो।

रमज़ानुल मुबारक का एक अहम और मुबारक अमल "एतिकाफ़" है, एतिकाफ़ का शाब्दिक अर्थ ठहरना है, शरीयत की भाषा में मर्द के लिए ऐसी मस्जिद में एतिकाफ़ की नियत से ठहरना होता है जिसमें पाँचों वक़्त की नमाज़ जमाअत के साथ अदा की जाती है जबकि औरत के लिए अपने घर के किसी कोने में एतिकाफ़ की नियत से ठहरना शर्ई एतिकाफ़ है वास्तव में एतिकाफ़ वह इबादत है जिसमें इन्सान सबसे कट कर और सबसे हट कर अपने वास्तविक स्वामी और पालनहार के आस्ताने पर और गोया उसके क़दमों पर पड़ जाता है, उसको याद करता है, उसकी तारीफ़ और पाकी बयान

करता है उसके हुज़ूर तौबा व इस्तिग़फ़ार करता है अपनी ग़लतियों और ख़ताओं को स्वीकार करता है, रहीम व करीम आका से मग़फ़िरत की भीक माँगता है।

एतिकाफ़ की अहमियत व फ़ज़ीलत, श्रेष्ठता और उसके दीनी फ़ायदे स्पष्ट हैं, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और सहाब—ए—किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम से एहतिमाम के साथ रमज़ानुल मुबारक के आख़िरी अशरे का एतिकाफ़ फ़रमाना साबित है, एतिकाफ़ से जहाँ आदमी गुनाहों और फुजूल बातों और कामों से सुरक्षित रहता है वहीं उसकी "रूह" शांत मन से अल्लह की इबादत में व्यस्त रहती है, मोतकिफ़ की हर घड़ी और हर पल इबादत में शुमार होता है, एतिकाफ़ का सबसे बड़ा उद्देश्य और लाभ यह है कि एतिकाफ़, शबे क़द्र को तलाश करने और उसमें इबादत करने का सबसे उत्तम और सरल साधन है।

एतिकाफ़ माहे रमज़ान में रूहानियत का चरमबिन्दु है, हदीस शरीफ़ के मुताबिक़ जो शख्स रमज़ान के दस दिनों में एतिकाफ़ करता है तो उसका यह अमल दो हज और दो उमरे के समान है यानी उसे दो हज

और दो उमरे का सवाब मिलेगा (बैहकी) एक दूसरी रिवायत में है कि जो शख्स ईमान की हालत में सवाब की उम्मीद करते हुए एतिकाफ़ करता है, उसके पिछले गुनाह मुआफ़ कर दिए जाते हैं। मस्जिदें, शैतान से बचने और उनसे सुरक्षित रहने के लिए बहुत मज़बूत क़िले और पनाहगाहें हैं, मोतकिफ़ के एतिकाफ़ की बरकत से यह सुरक्षित क़िले और पनाह गाहें हासिल हैं। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इरशाद है: बेशक शैतान इन्सान के लिए भेड़िया यानी दुश्मन है जैसे बकरियों का दुश्मन भेड़िया होता है वह मौका पाते ही अलग होने वाली और किनारे होने वाली बकरियों को पकड़ लेता है, बस तुम घाटियों में अलग हो जाने से बचो और अपने ऊपर जमाअत और मस्जिद के संबन्ध को अनिवार्य कर लो। रमज़ान शरीफ़ का पूरा महीना जिन सामूहिक आमाल पर आधारित है उनको देख कर यह बात खुल कर सामने आती है कि इस्लाम धर्म का उद्देश्य यह है कि इन्सान का शरीर भी पवित्र हो और हृदय भी पवित्र हो, इन्सान मन चाही ज़िन्दगी न गुज़ारे बल्कि रब चाही ज़िन्दगी

गुज़ारे एक मोमिन बन्दा अल्लाह के आदेशानुसार अपनी इच्छाओं को पूरा करता है, मनमानी नहीं करता है तो अल्लाह उससे प्रसन्न होता है और उसको पुरस्कार देता है, रमज़ान की मेहनतों और इबादतों का पुरस्कार ईदुल फ़ित्र का त्योहार है, इस पुरस्कार की प्रसन्नता में अल्लाह के बन्दे ईदगाह जाकर दुगान-ए-ईद अदा करते हैं, अल्लाह की बड़ाई और महिमा बयान करते हैं, ईद की खुशी में अपने ग़रीब भाइयों को शरीक करने के लिए उनको सदक-ए-फ़ित्र अदा करते हैं, सदक-ए-फ़ित्र की अदाएगी ईदगाह जाने से पहले की जाती है, इस विषय में कुछ ज़रूरी मसाएल हैं जो निम्नलिखित हैं:-

इस्लाम ने ईदुलफ़ित्र की खुशी में ग़रीबों और मिस्कीनों को शरीक करने के लिए और रोज़े में पेश आने वाली कमियों और कोताहियों की पूर्ति और भरपाई के लिए सदक-ए-फ़ित्र को हर साहिबे निसाब पर लाज़िम करार दिया है और अनिवार्य किया है। बुनियादी ज़रूरतों के अलावा जो भी मुसलमान निसाब की मात्रा में मालिक होगा उस पर सदक-ए-

फ़ित्र वाजिब होगा, यह सदक-ए-फ़ित्र हर मुसलमान पर वाजिब है, मर्द हो औरत हो, बालिग़ नाबालिग़, मुसाफ़िर, मुक़ीम सब पर, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मक्के की गलियों में एक मुनादी भेजा कि एलान करदे कि आगाह हो जाओ! हर मुसलमान पर सदक-ए-फ़ित्र वाजिब है।

(तिर्मिज़ी)

ईद के दिन सुबह सादिक के वक़्त जो मुसलमान ज़िन्दा हो और ज़रूरत से ज़ाएद ऐसे निसाब का मालिक हो जिस पर ज़कात वाजिब हो जाती है या उसके घर में रोज़ मर्ह के इस्तेमाल की चीज़ों से ज़ाएद ऐसा सामान हो जो साढ़े बावन तोला चाँदी के बराबर (612/35 ग्राम) या साढ़े सात तोला (479/87 ग्राम) सोना या उनकी कीमतों के बराबर या उससे ज़्यादा हो तो फिर उस पर सदक-ए-फ़ित्र वाजिब है। सदक-ए-फ़ित्र अपनी तरफ़ से और नाबालिग़ बच्चों की तरफ़ से अदा करना वाजिब है। एक व्यक्ति का सदक-ए-फ़ित्र एक किलो 632 ग्राम गेहूँ या उसकी कीमत अदा की जाए। जो आदमी ज़कात लेने का मुस्तहक़ है उसे फ़ित्रा देना भी जाएज़ है।

रमज़ान के महीने में पूरी इस्लामी दुनिया प्रभावित होती है, मस्जिदों और घरों में इबादत का माहौल बनता है, बेनमाज़ी नमाज़ी बन जाते हैं, लाखों और करोणों रूपये की ज़कात की अदाइगी होती है जिससे दीनी मदरसों और इदारों का खर्च पूरा होता है, ग़रीबों और नादारों की मदद होती है, तक्वा और गुनाहों से बचने का जज़बा पैदा होता है, इन्सानों को आख़िरत की याद ताज़ा होती है, रमज़ान के रोज़ों और इबादत से हमारे अन्दर जो नेक और अच्छे कामों की स्पिरिट पैदा होती है उसे हमें साल भर बाकी रखना चाहिए ताकि हमारी दुनिया और आख़िरत कामयाब हो जाए।

रमज़ान का एक महीना अल्लाह के वास्ते और उसके हुक्म और आदेश पर मोमिन बन्दा भूख और प्यास की मशक्कतें बरदाश्त करता है नफ़सानी ख़्वाहिशत को दबाता है और फिर जब ईद के दिन फिर से रुख़सत मिलने पर जो स्वाभाविक प्रसन्नता होती है उसका अन्दाज़ा नहीं लगाया जा सकता इसी तरह रात की तरावीह और कियामे लैल तहज्जुद की नमाज़ और रमज़ान में सदक़ात व ख़ैरात करके जब मोमिन बन्दा फ़ारिग़ होता है तो

वह खास लज्जत व फ़रहत महसूस करता है ईद की नमाज़ पढ़ता है। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पहली नमाज़ ईद (ईदुल फ़ित्र) सन दो हिजरी में अदा की और फिर उसे कभी तर्क नहीं फ़रमाया लिहाज़ा ये नमाज़ वाजिब के दरजे में है।

ईदुल फ़ित्र के दिन की अहमियत और फ़ज़ीलत पर बेशुमार हदीसों मौजूद हैं और कुरआन मजीद की आयात में भी इसकी जानिब इशारा मौजूद है।

एक हदीस में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं कि जो शख्स सवाब की नियत से जागे और इबादत में मशगूल रहे उसका दिल उस दिन न मरेगा, जिस दिन सबके दिल मर जाएंगे, एक और रिवायत में है कि जब ईदुल फ़ित्र की रात होती है तो उसका नाम आसमानों पर “लैलतुल जाएज़ा” इनआम की रात से लिया जाता है। इस्लाम ने त्योहार के तौर पर मुसलामनों को सिर्फ़ दो दिन दिए हैं एक ईदुल फ़ित्र और दूसरा ईदुल अज़हा, इन दोनों त्योहारों को मनाने के लिए जिन दिनों का इन्तिखाब किया, वह भी दुनिया से निराले हैं:— चुनांचे ईदुल फ़ित्र रमज़ान गुज़ारने के बाद रखी गई कि

मेरे बन्दे पूरा महीना इबादत में मशगूल रहे, पूरे महीने उन्होंने मेरी खातिर खाना पीना छोड़े रखा, नफ़सानी ख़्वाहिशात को छोड़े रखा और पूरा महीना इबादत के अन्दर गुज़ारा, उसकी खुशी और इन्आम में ये ईदुल फ़ित्र अता फ़रमाई, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, हर क़ौम के लिए ईद होती है और ये हमारी ईद है।

(बुख़ारी)

ईद का दिन यकीनन खुशी का दिन है सारे ईमान वाले खुश हैं, मगर ये खुशी नये कपड़ों और लज़ीज़ खानों की वजह से नहीं है, किसी खेल तमाशे की वजह से नहीं बल्कि वह इसलिए खुश हैं कि आज उनसे उनका रब राज़ी है उन्होंने मुसलसल एक महीने अल्लाह की इबादत की अल्लाह के बन्दों के साथ हुस्न सुलूक किया, दिन को रोज़ा रखा, रात को तरावीह अदा की, तहज्जुद भी पढ़ी, कुरआन की तिलावत की, हर तरह के गुनाहों से बच कर एक पाकीज़ा ज़िन्दगी गुज़ारी, इन सब आमाल की वजह से अल्लाह उनसे राज़ी हो गया और ज़ाहिर है कि जब बन्दे से उसका मालिक राज़ी हो जाए तो इससे बढ़ कर उसके लिए क्या खुशी हो सकती है,

इसीलिए कहा गया है:— “व रिज़वानुम मिनल्लाहे अकबर”।

(सूर: तौबा—72)

ईद का ये त्योहार इस्लाम के मिज़ाज और मुसलमानों की सभ्यता और संस्कृति के मूल्य का दर्पण है और अल्लाह के साथ जो उनका संबन्ध लगाव है उसका प्रदर्शन है। ईदुल फ़ित्र सामाजिकता का प्रदर्शन, प्रतीक और सूचक है, ये त्योहार न्याय समानता एकता और शान्ति का सन्देश है, जात विरादरी, खानदान का अन्तर किए बिना एक ही सफ़ में खड़े हो कर ईद की नमाज़ पढ़ते हैं, राजा प्रजा, स्वामी, सेवक का कोई भेदभाव नहीं, और एक इमाम के पीछे कंधे से कंधा मिला कर खड़े होते हैं, बच्चों से प्यार बड़ों का सम्मान ज़रूरी है।

अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फ़रमान है जो हमारे छोटों पर करुणा और दया का व्यवहार न करे और हमारे बड़ों का सम्मान न करे वह हममें से नहीं।

ऐ आसमानों और ज़मीन के पैदा करने वाले दुनिया और आखिरत में तू ही मेरा पालनहार है, मुझे मुसलमान उठाना और भले लोगों में शामिल करना।

(कुरआन)



उलमा व मस्जिद के इमामों से कुछ गुजारिशें

हजरत मौलाना सय्यद बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

उलमा—ए—उम्मत हकीकत में दिल की हैसियत रखते हैं और दिल के मुताल्लिक हजरत मुहम्मद (सल्ल०) का इरशाद है कि:—

“जिस्म में गोश्त का एक टुकड़ा ऐसा है कि अगर वह सही हो जाए तो पूरे जिस्म का निजाम सही हो जाता है और अगर वह बिगड़ जाए तो पूरे जिस्म का निजाम खराब हो जाता है और वह टुकड़ा दिल है।” (सहीह मुस्लिम: 41789)

अल्लाह तबारक व तआला ने दिल को बादशाह बनाया है। वह जो फैसला करता है, दिमाग उसको लागू करता है, मानो दिल की हैसियत बड़ी अहम है। इसीलिए जगह—जगह यह हुक्म दिया गया है कि हम सबसे बढ़कर अपने दिल की तरफ तवज्जो दें। फर्द (व्यक्ति) की इस्लाह दिल से होती है। अगर आदमी का दिल बन जाए और उसमें अल्लाह की याद समा जाए तो फिर उसकी जिन्दगी का रुख कुछ और होता है। दिल की हैसियत ज़मीन की है। इस पर जैसी खेती की जाएगी, वैसे ही फल—फूल खिलेंगे

बल्कि ऐसे मजबूत पेड़ भी तैयार होंगे जिसके साये से बेशुमार लोग फायदा उठाएंगे।

उलमा और मस्जिदों के इमाम का तबका भी हकीकत में मिल्लत के लिए दिल की हैसियत रखता है। अगर इनके अंदर इस्लाह (सुधार) का ज़ब्बा होगा, तकवा का मिजाज होगा और इंसानियत का दर्द होगा तो यकीनन इसके गैर—मामूली नतीजे सामने आएंगे। भटकी हुई इंसानियत को नई सिम्त (दिशा) मिलेगी और पूरी दुनिया को नफा (लाभ) हासिल होगा।

उलमा अम्बिया के वारिस हैं और अम्बिया (अलैहिमुस्सलाम दीनार—ओ—दिरहम (माल—ओ—जायदाद) का वारिस नहीं बनाते बल्कि वह इल्म का वारिस बनाते हैं। वह इल्म जो अल्लाह की मारिफत (पहचान पैदा करे) आखिरत का ध्यान और जवाबदेही का एहसास पैदा करे और आखिरत के अंजाम से डराए और इंसान को सही रास्ता दे। फिर इसके नतीजे में आदमी के अंदर दर्द—ओ—फिक्र की कैफियत पैदा हो और वह दूसरों तक इसको मुंतकिल

करे। उलमा के अंदर इस दर्द का होना ज़रूरी है। यह अंबिया की विरासत है और सबसे बढ़कर मोहसिन— ए—इंसानियत हजरत मुहम्मद (सल्ल०) की विरासत है। जब आदमी के अंदर एक कुढ़न और तड़प पैदा होती है और वह इख्लास के साथ मैदान—ए—अमल में आता है तो अल्लाह तबारक व तआला उसके नतीजे में मुल्कों में इंकलाब बरपा कर देता है।

मौजूदा हालात में हर आलिम—ओ—हाफिज और मस्जिद के इमाम का यह पहला फरीजा (कर्तव्य) है कि सबसे पहले हमें अपनी फिक्र करनी है। अपनी इसलाह—ओ—तरबियत करनी है और अपने दिल को संवारना है। आज ज़रूरत है अपने ऊपर मेहनत करने और अपना मकाम—ओ—मन्सब पहचानने की। हकीकत यह है कि हम जिन उलूम के तर्जुमान हैं, वह अल्लाह के नबी (सल्ल०) के अता किये हुए हैं और जिस मुसल्ले पर खड़े हो कर हम नमाज़ पढ़ाते हैं, यह वही मुसल्ला है जिस पर अल्लाह के नबी (सल्ल०) ने अपनी पूरी उम्र—ए—मुबारक

खड़े होकर लोगों की इमामत की और आप के बाद खुल्फा—ए—राशिदीन ने यह फरीजा अंजाम दिया। बड़े अफसोस की बात है कि आज हमने अपने तर्ज—ए—जिंदगी (जीवन शैली) से इसके मुकाम को घटा दिया।

इस वक़्त उम्मत की सफ़ों में एक इतिशार (बिखराव) बरपा है। लोगों का ईमान खतरे में है और इतिदाद (धर्म परिवर्तन) की एक आम फिजा है। इन हालात में सबसे बढ़कर हमारी यह जिम्मेदारी है कि खास तौर पर आने वाली नस्ल की हम हिफाजत कर सकें। अगर इसके लिए कुछ अहम और ज़रूरी नुक़ात (बिंदुओं) को सामने रखकर काम किया जाए तो इंशाअल्लाह बड़ी आसानी होगी। मुनासिब यह है कि इन कामों के लिए मस्जिदों को सेंटर बनाया जाए। वह काम यह हैं:

1. जुमा के खिताबात (भाषण):— जुमा के खिताबात पर ज़ोर दिया जाए और इसके लिए बाकायदा एहतिमाम किया जाए। इन खिताबात में ऐसे मौजूआत (विषयों) को लाया जाए जो इस वक्त लोगों की एक ज़रूरत हैं। इन बयानों से अकीदे की इस्लाह हो, इबादत

की तरफ रग़बत पैदा हो, समाज के मोहलिक अमराज (घातक बीमारियों की निशानदेही हो, उनसे बचने का हल और तदबीर (उपाय) भी बयान की जाएं और उनसे होने वाले नुक़सान भी सुनाए जाएं ताकि लोगों में एक एहसास पैदा हो। उन खिताबात का वक़्त भी बहुत लंबा न हो लेकिन गुप्तगू ऐसी जामेअ (व्यापक) और मुफीद (लाभकारी) होना चाहिए जिसमें हर एक के लिए नफे का सामान हो।

2. हफ़तावारी दर्स—ए—कुरआन और दर्स—ए—हदीस:— हफ़तावारी दर्स—ए—कुरआन और दर्स—ए—हदीस का निजाम बनाया जाए और इन दुरुस में भी वक्त का खास लिहाज रखा जाए। दर्स—ए—कुरआन में सबसे पहले सूरह फातिहा, फिर तीसवें पारे की आखिरी दस सुरतों का इन्तिखाब होना चाहिए जो आम तौर पर नमाजों में पढ़ी जाती हैं। इसके बाद उन सूरतों का इन्तिखाव मुफीद है जिनमें अंबिया (अलैहिमुस्सलाम के वाकियात हैं। दर्स में उन बातों को लाना मुफीद होगा जिनका ताल्लुक समाज की इस्लाह (सुधार) से है।

3. काउंसलिंग सेंटर का क़ायम (स्थापना):— हर इलाके में चार या पांच मोहल्लों को जोड़कर एक काउंसलिंग सेंटर कायम किया जाए और वह बच्चियां और नौजवान लड़कियां जो कॉलेजेज या यूनिवर्सिटीज में तालीम हासिल करती हैं या वह कहीं मुलाजमत (नौकरी) करती हैं, इन सेंटर्स से उनको जोड़ा जाए और हफ़तावारी प्रोग्राम आयोजित किये जाएं, ताकि वहां उनकी सही तरबियत का इतिजाम किया जाए और दीन पर उनका एतमाद बहाल हो सके। हफ़तावारी दीनी इज्तिमा का सिलसिला भी इसी सिलसिले की एक कड़ी है।

4. मकातिव का जाल:— हर इलाके के अंदर मस्जिदों में मक्तबों का एक जाल बिछा दिया जाए। जो बच्चे स्कूलों में तालीम हासिल कर रहे हैं या जो बच्चे किसी स्कूल या मदरसे में नहीं पढ़ते उन सबके लिए मस्जिद में मकतब का निजाम कायम किया जाए। वहां उनको कुरआन मजीद पढ़ाया जाए, उर्दू पढ़ाई जाए, उनका कलिमा दुरुस्त कराया जाए और दीन की ज़रूरी मालूमात दी जाए ताकि मुसलमानों की नई पीढ़ी

दीन की ज़रूरी तालीम हासिल कर सके।

5- बैतुल-माल का कयाम:- इलाकाई सतह पर एक बैतुल-माल (सामुदायिक कोष की स्थापना भी मौजूदा हालात में एक लाभकारी काम है) यह काम बड़ा नाजुक है लेकिन इसमें शुब्हा नहीं कि यह मिल्लत की एक ज़रूरत है। इस वक़्त बहुत से घरों का हाल यह है कि फ़क्र-ओ-फ़ाका (गरीबी और भुखमरी की वजह से उनका ईमान खतरे में पड़ जाता है। बैतुल-माल वसीअ (विस्तृत: पैमाने पर कायम न किया जाए बल्कि दो-चार मोहल्लों को जोड़कर वहां के अहल-ए-सरवत (मालदार लोगों से कम-अज-कम दस-दस हजार रुपये की रकम लेकर जमा कर ली जाए। अगर इसमें यह तय कर लिया जाए कि एक साल तक पांच हजार या उससे ज्यादा रकम हर महीने जमा की जाती रहेगी तो इस तरह एक बड़ी रकम बैतुल-माल में जमा हो जाएगी। फिर इसके जरिये से ज़रूरतमंदों को कर्ज दिया जाए और इसकी अदायगी के लिए दो लोगों को बतौर जामिन (गारंटर) मुकर्रर किया जाए

और यह निजाम भी बनाया जाए कि महीने-महीने या साल-दो साल की मुद्दत में कर्ज की यह रकम वापस होती रहेगी और अगर किसी सूरत में रकम वापस न मिल सके तो जकात की मद से इसको पूरा कर लिया जाए। इसका फायदा यह होगा कि यह रकम बढ़ती जाएगी और लोगों की बेशुमार ज़रूरतें आसानी से पूरी हो जाएंगी। इंशाअल्लाह यह तरीका लोगों के लिए गैर-मामूली नफा-बख़्श होगा और उनके ईमान की सलामती का जरिया भी साबित होगा।

5. तहरीक-ए-प्याम-ए-इंसानियत:- हर शहर और हर इलाके में तहरीक-ए-प्याम-ए-इंसानियत का काम भी इंतिहाई ज़रूरी है। अगर इस मुल्क में हमने अपने बिरादरान-ए-वतन गैरमुस्लिम भाइयों को नजरअंदाज किया तो हम बहुत दिनों तक अमन के साथ नहीं रह सकते। हमारी तमाम दीनी सरगर्मियों, मकातिब-ओ-मदारिस और मसाजिद के लिए इसकी हैसियत बुनियाद की है। इस काम की दो अहम बुनियादें हैं, यह काम नज़रियाती सतह (वैचारिक स्तर) पर ज़रूरी है

और रिफाही (कल्याणकारी) सतह पर भी। नज़रियाती तरीके पर काम गोया हमारा एक दावा है और रिफाही काम इसकी अमली दलील है। इस मुल्क के मौजूदा हालात में यह बड़ा मुफीद काम है। इंशाअल्लाह इसके जरिए हालात साजगार होंगे और गलत फहमियां भी दूर होंगी।

7. इस्लामिक स्कूलस:- हर इलाके में इस्लामिक स्कूलस कायम किए जाएं। इसके बगैर नई नस्ल को ईमान पर बाकी रखना आसान काम नहीं है, इसलिए कि एक बड़ी तादाद स्कूलों ही में तालीम हासिल करती है और वहीं के माहौल और कल्चर से मुतास्सिर होती है। मुनज्जम (व्यवस्थित तौर पर इस्लामिक स्कूल का का कयाम (स्थापना) भी ज़रूरी है।

अगर इन कुछ बुनियादी कामों की तरफ तवज्जो कर ली गई तो इंशाअल्लाह हालात बदलेंगे और हमारी नई नस्ल में दीन का ऐतमाद बहाल होगा। ज़रूरत है कि हर इलाके में एक एक घर का सर्वे किया जाए और इन चन्द बिन्दुओं को सामने रख कर काम शुरू कर दिया जाए।



भारत के अतीत में मुस्लिम शासकों की धार्मिक निष्पक्षता

सैयद सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान

अबुल फजल और दीन—ए इलाही:—

अकबरनामा में अकबर महान के धर्म का विवरण तो इतना ही मिलता है, लेकिन आईन—ए अकबरी से अतिरिक्त विवरण प्राप्त होते हैं। अबुल फजल ने दीन—ए इलाही का नाम कहीं नहीं लिया और रहनुमोई के शीर्षक से आईन—ए अकबरी में इसका विवरण उसी शैली में लिखता है जिसमें उसने पूरी आईन—ए—अकबरी लिखी है। रहनुमोई के आरम्भ में तो पहले वह यह लिखता है कि सृष्टि के स्वामी की इच्छा से मानवीय दृष्टि दो रंगी की गर्द से पट जाती है। प्रत्येक व्यक्ति एक नया धर्म अपने लिए चुनकर अपनी दुनिया में अपना जीवन व्यतीत करता है और दूसरे गिरोह की निन्दा और अपमान में अपना समय व्यतीत करता है। बदगुमानी और अल्पदृष्टि पैदा होती है। मूल्य पहचानने और कृपा करने की आदत समाप्त हो जाती है। अन्यथा धर्म क्या संसार क्या, एक लुभावना सौन्दर्य है जो कुछ हज़ार पर्दों को चमकाता है। एक लम्बी

चौड़ी कालीन बिछी हुई है। यह विभिन्न रंगों के साथ चेहरे को प्रकाशित करता रहता है।

*दर हकीकत नसब
आशिक व मअशुक यके सत
बुल फजूला सनम
व ब्रहमने साख्ता अंद
यक चिरागे अस्त दरीं
खाना व अज परतौ आँ
हर कुजा मी निगरम
अन्जुमने साख्ता अंद*

एक व्यक्ति अपने आप को लअनत मलामत करना अपना उद्देश्य बना लेता है और दूसरी दुनिया वालों की देखरेख को अल्लाह का डर और अपनी सुरक्षा समझता है। ऐसे ही विभिन्न समूहों के लोग अपने—अपने विचारों के अनुसार विश्वास रखते हैं और सपनों और कल्पनाओं में आनन्द प्राप्त करते नजर आते हैं। लेकिन जब यह आदतें छोड़ देता है तो तकलीद (अन्धानुकरण) का ताना—बाना टूट जाता है तो उसके सामने एक रंगी का चेहरा उभरता बुद्धिमानी का चिराग हर घर में प्रकाशित नहीं होता और हर दिल में “मालिक की पहिचान” की प्रशंसा नहीं होती और यदि किसी को यह

पहिचान की योग्यता प्राप्त हो जाती है तो वह प्रकट करने से डरता है और अपनी जान जाने के डर से चुप्पी साध लेता है और यदि कोई अपनी दिलदारी से कुछ कहने लगता है तो कम समझ लोग उसको दीवाना समझकर उसके कथन को विश्वास योग्य नहीं कहते, और नीची जात के लोग और अभागे लोग उसको काफिर और अनिश्चरवादी कहकर उसका जीवन समाप्त कर देते हैं। लेकिन जब किसी कौम का सौभाग्य से ऐसा समय आता है कि सच्चाई उसकी परिस्थितियों के अनुकूल हो जाती है और अल्लाह की मर्जी की माँग होती है कि लोग सच्चाई की चाह की बरकतों से लाभ उठाएँ तो ऐसा बादशाह और शासक पैदा होता है कि भावों की दुनिया का नेतृत्व भी उसके हवाले कर दिया जाता है और किसी माध्यम के बिना उसको ज्ञान प्राप्त हो जाता है और उसके दिल से द्वैत का निशान मिट जाता है और वह अनेकता में एकता का जलवा देखता है और खुशी और गम की भावनाओं से

मुक्त होकर जीवन व्यतीत करता है। यही स्थिति हमारे जमाने के शासक की है, आरम्भ ही से पेशानी के निशान से आदमी की प्रतिष्ठा और ऊँचाई का अनुमान हो रहा था। दूरदर्शी शहरयार ने एक जमाने तक अपने आप को धर्म से बेपरवाही के पर्दे में छिपाए रखा, और अपने को इस सेवा का हकदार प्रदर्शित न होने दिया लेकिन जब किसी चीज को अल्लाह खुद चाहता है, उसको रोकने की कौन क्षमता रखता है लेकिन मजबूरी में अल्लाह तआला की खुशी के लिए रहनुमोई अपनाया। इस भूमिका के बाद अबुल फजल लिखता है—

मार्गदर्शन आरम्भ हुआ तो जिनके दिल प्यासे थे वह सन्तुष्ट होने लगे। जब सच्चाइयों और विवेक का प्रकटीकरण हुआ तो जमाने के लोगों को आश्चर्य हुआ, लेकिन इस नेतृत्व से सौभाग्य का एक शहर आबाद हो गया और अधिकतर सच्चे दिल वाले लोग कम अवधि में बुद्धि और विवेक की उस मंजिल तक पहुँच गए जहाँ रुहानी मुजाहिद बहाने करके भी कदम नहीं रख सके। ब्रह्मचारी, सन्यासी, योगी, शैव, कलन्दर, हकीम, सूफी और हर तरह के लोग सिपाही, सौदागर, किसान आदि उपस्थित होने लगे और उनकी आँखे

सच्चाई से अवगत होने लगीं। तुर्क, ताजिक, व्यक्ति, बुजुर्ग, जानकार अनजान, दूर और निकट सब लोग निकट आ गए और अपनी परेशानियाँ उनको देखकर हल करते और जो लोग दूरी के कारण या भीड़ के कारण पहुँच नहीं पाते तो परोक्ष में अपने आप तैयार करते और प्रार्थना पत्र भेजते। जब कभी वह देश के प्रशासनिक मामले या क्षेत्रों को अधीन करते या सैर और शिकार के लिए यात्रा करते हैं, तो शायद ही कोई शहर या कस्बा होगा जहाँ के मर्द और औरत भीड़ लगाकर अपने हाथों पर उपहार रखे हुए और मुँह से आभार प्रकट करते हुए न आते हों। वह अपने माथे को रगड़ते हुए कहते हैं। हमने आपकी मन्नत मानी थी, जिससे हमारा काम आपकी मदद के कारण पूरा हुआ। लोग अपने चरित्र की अच्छाई, स्वास्थ्य और आँखों की रोशनी, बेटे के जन्म, दोस्तों से मिलने, जीवन के लम्बे होने, प्रतिष्ठा और सम्पत्ति के विकास और इच्छाओं की पूर्ति की याचना करते। सच्चाई को समझने वाले बादशाह प्रत्येक को विनम्र उत्तर देते और उनके भय का इलाज करते। कोई दिन ऐसा न व्यतीत होता कि लोग घड़े में पानी लेकर उपस्थित न होते और उसको दम देने की

याचना न करते। आसमानी अक्षरों में लिखे हुए को पढ़ने वाले बादशाह, उनको उम्मीद की खबर सुनाते और पानी को सूरज की रोशनी में रख देते और उसकी इच्छा पूरी करते, बहुत से बीमार जो अच्छे नहीं होते इस इलाही तिलिस्म से स्वस्थ हो जाते। एक व्यक्ति ने अपनी जीभ काट कर बादशाह के आसन पर डाल दिया और कहा कि यदि मुझको खुदा ने भाग्यशाली पैदा किया है और मेरा विश्वास सही है तो मेरी जीभ ठीक हो जाएगी, अधिक दिन नहीं व्यतीत हुए कि उसकी इच्छा पूरी हुई। जो व्यक्ति बादशाह की खुदा की पहचान, और सत्यवादिता से परिचित है वह इन अचरजों पर अधिक ध्यान नहीं देता।



कुरआन की तिलावत के चार फ़ायदे

- कुरआन मजीद की तिलावत से अल्लाह की मुहब्बत में बढ़ोत्तरी होती है।
- हर हर शब्द पर दस नेकियाँ मिलती हैं।
- दिल का जंग साफ़ होता है।
- क़यामत के दिन कुरआन गवाही देगा।

समाज की बुराईयाँ और उनका इलाज

मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी

अश्लील बातें करना:-

अश्लील बातें करना भी इस वक्त समाज की उन बीमारियों में से है जो फैलती जा रही हैं, इस में बड़ा हिस्सा मीडिया और प्रसारण स्रोतों का है, इसकी खासतौर से वो किस्म जिसका तअल्लुक यौन शक्ति से है, इसको आज समाज में बुराई नहीं समझा जाता, यूरोप ने इंसानी दुनिया को जिन बुराईयों में खुलेआम लिप्त किया है, उन में ये अश्लीलता भी है, इसका ये नतीजा है कि जबानें सुरक्षित नहीं।

जाहिली जमाने में ये बीमारी थी कि लोग अपने दोस्तों की संगत में आनन्द के तौर पर निःसंकोच औरतों की सुन्दरता का जिक्र करते थे, और जो काम छुप कर होता था उसका खुलेआम जिक्र किया जाता था, एक बार आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने खुतबा दिया और फरमाया:-

“क्या तुम में कोई ऐसा आदमी है जो अपनी बीवी के पास जाता है तो दरवाजा बंद कर लेता है, और उस पर पर्दा

डाल देता है, और इस तरह खुदा के परदे में छुप जाता है? लोगों ने कहा: “हाँ” फिर फरमाया कि “उसके बाद लोगों की संगत में बैठता है तो कहता है कि मैंने ये किया” इस पर सब लोग खामोश रहे, फिर औरतों की तरफ मुखातिब हो कर फरमाया कि “क्या तुम सब इस किस्म के वाकियात बयान करती हो?” इस पर एक औरत ने दोजानू बैठ कर कहा कि “हाँ, मर्द व औरत दोनों इस किस्म के वाकियात बयान करते हैं” फरमाया: “तुम लोग जानते हो कि इसकी क्या मिसाल है? इसकी मिसाल उस चुड़ैल की है जो गली में एक शैतान से मिली और उसने उससे संभोग किया, हालांकि लोग उसको देख रहे थे।” (अबू दाऊद: 296, स्रोत सीरतुन्नबी: 494-495/6)

इस दौर की जाहिलियत ने सारे परदे खोल दिए, इन्टरनेट की सुविधा और मोबाइल ने घर घर इस लानत को पहुंचा दिया, पहले निडर नौजवान फिल्में देखते थे, फिर मजलिसों में इसकी स्टोरी एक

दूसरे को सुनाते थे, आज मोबाइल में वो सारी खुराफात देखी और दिखाई जा रही हैं, सुनी और सुनाई जा रही हैं, जिसके नतीजे में अश्लीलता की एक भयावह बाढ़ आ रही है, कुरआन मजीद ने साफ़ एलान किया:

अनुवाद: “यकीनन जो लोग ये चाहते हैं कि ईमान वालों में अश्लीलता फैले, उनके लिए दुनिया व आखिरत में दर्दनाक अज़ाब है और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते।”

(अल-नूर: 19)

दीन का मिजाज ये है कि वो औरत-मर्द के सम्बन्धों के लिए सांकेतिक शब्दों का इस्तेमाल करता है, जो चीज़ छुपाई गई उसको किसी भी तरह शब्दों में जाहिर करना मुनासिब नहीं समझा गया, हाँ, कहीं फिक्ही ज़रूरत के लिए इसको स्पष्ट करना ज़रूरी हुआ तो किया गया।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का तरीका बायान किया जाता है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बहुत ही शर्म व

हया वाले थे, उम्मत के लिए यही नमूना है।

अश्लील बातें करना गुस्से के वक्त जाहिर होता है, आदमी भूल जाता है कि वो क्या बक रहा है, गाली-गलोज शुरू कर देता है, ये अश्लीलता में ही शामिल है। हदीस में कहा गया है "मोमिन को गाली गलोज करना गुनाह की बात है"

(सहीह बुखारी: 6044)

आदमी आगे बढ़ता है तो माँ-बाप को गाली देता है, गुप्त खराबियों के परदे खोल देता है, चीखता है और चिल्लाता है, अल्लाह तआला सब बुराइयों को बहुत ही नापसंद करता है, इरशाद है:

अनुवाद: "अल्लाह (किसी की) बुरी बात की चर्चा पसंद नहीं करता सिवाय उसके जिस पर जुल्म हुआ हो, और अल्लाह खूब सुनता जानता है।"

(अल-निसा: 148)

कोई पीड़ित है तो यकीनन उसको अपनी बात पहुँचाने का और बुलंद आवाज़ में इसको कहने का हक है।

बदजुबानी आदमी को घृणित बना देती है, उसको सामाजिक जिन्दगी के फायदों से वंचित कर देती है।



पृष्ठ ...07.....का शेष

ने किसी आदमी को बार-बार "कुल हुवल्लाहु अहद" पढ़ते सुना तो उसने सुबह को अल्लाह के रसूल सल्ल० से उसका जिक्र किया (मानो वह आदमी उसको कम समझता था इसलिये छोटी समझकर बार-बार पढ़ता था) आप सल्ल० ने फरमाया कसम उस जात की जिसके कब्जे में मेरी जान है कि यह सूर: तिहाई कुरआन के बराबर है।

(बुखारी)

मुअव्वजतैन:-

हजरत उकब: बिन आमिर रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फरमाया:- क्या तुमने उन आयतों को देखा है जो इस रात उतरी हैं, उनके बराबर किसी ने कभी नहीं देखा। वो "कुल अऊजु बिरब्बिल फलक" और "कुल अऊजु बिरब्बिन्नास" हैं। (मुस्लिम)

हजरत आइशा रज़ि० से रिवायत है कि जब अल्लाह के रसूल सल्ल० बीमार हुए तो मुअव्वजतैं पढ़ कर दम कर लिया करते थे, जब आप सल्ल० का दर्द बहुत बढ़ जाता तो मैं मुअव्वजतैं पढ़ती और उसकी बरकत की उम्मीद में आप सल्ल० के पवित्र हाथ पर हाथ फेरती।

(बुखारी)

मुअव्वजतैं- वो सुरतें और दुआएं, जिनमें शैतान, जिन्नात और बुरे लोगों से खुदा की पनाह (शरण) चाही गई है, जैसे ऊपर वाली दो सुरतें और हदीस शरीफ में आई दूसरी दुआएं।

दम करने का सही तरीका:-

हजरत आइशा सिदीका रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० का मामूल (दिनचर्या) था कि हर रात को जब आप सल्ल० आराम फरमाने के लिए बिछौने पर तशरीफ लाते तो अपने दोनों हाथों को मिला लेते, (जिस तरह दुआ के वक्त दोनों हाथों को मिलाया जाता है) फिर हाथों पर फूंकते और "कुल हुवल्लाहु अहद" और कुल अऊजु बिरब्बिल फलक और कुल अऊजु बिरब्बिन्नास" पढ़ते, फिर जहां तक हो सकता, अपने दोनों हाथों को फेरते, सिर, चेहरा और जिस्म के सामने के हिस्से से शुरू फरमाते, उसके बाद बायें जिस्म पर (जहां तक आप सल्ल० के हाथ जा सकते, वहां तक हाथों को फेरते), यह आप सल्ल० तीन बार करते।

(बुखारी)



रोज़ा कहें या उपवास

इं० जावेद इक़बाल

ईमान, नमाज़, ज़कात के बाद इस्लाम का चौथा ज़रूरी अमल रोज़ा है। कुरआन पाक में अल्लाह तआला ने ईमान कुबूल करने वालों को मुखातब करते हुए फरमाया है कि ऐ ईमान वालो तुम्हारे लिए रोज़ा रखना उसी तरह अनिवार्य किया गया है जैसे कि तुम से पहले के लोगों पर किया गया था, ताकि तुम्हारे अंदर तकवा (पवित्र आचरण) का गुण पैदा हो सके।

स्पष्ट है कि हर जमाने में और हर इलाके में आने वाले नबियों, रसूलों के द्वारा उनकी कौमों को भी रोज़ा रखने का आदेश दिया गया था। यह अलग बात है कि रोज़े का स्वरूप कौमों की ताक़त और सलाहियत के अनुसार अलग-अलग हुआ करता था। हम अपने साथ रहने वाली कौम पर नजर डालें, उनके धर्म में भी रोज़े का बहुत महत्व है।

विभिन्न अवसरों पर हमारे वतनी भाई व्रत या उपवास के नाम से रोज़ा रखते रहते हैं। हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के ज़माने में हर महीने तीन रोज़े का हुक्म था, हज़रत ईसा के जमाने में 40 दिन का रोज़ा होता था। इस के अलावा पिछले जमाने

में रोज़े का समय भी अलग-अलग हुआ करता था। अतः हज़रत मुहम्मद सल० की कौम को रोज़े का हुक्म देने के साथ अल्लाह तआला ने यह कह कर मुसलमानों को तसल्ली दी है कि यह तुम पर कोई ज़्यादती नहीं है, रोज़े का हुक्म तो सभी कौमों को दिया गया था।

मौजूदा ज़माने में मुसलमानों को पूरे एक महीने के लगातार रोज़े रखने का हुक्म हुआ और उसका समय सुबह सादिक (भोर) से शुरू हो कर सूरज डूबने तक निर्धारित किया गया। इस महीने का नाम ही रमजान है। रमजान के महीने में रोज़ा रखना अनिवार्य है, रोज़ा न रखने वाला, यदि कोई मजबूरी न हो तो महा पापी है, क्योंकि वह खुदा के हुक्म को तोड़ने वाला है। हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने एक बार फरमाया कि जो व्यक्ति बिना किसी बीमारी और मजबूरी के रमजान का एक रोज़ा भी छोड़ दे, फिर उसके बदले सारी उमर रोज़ा रखे तब भी छोड़े हुए रोज़े के बराबर नहीं हो सकता।

रोज़े की हालत में क्योंकि इंसान खाने पीने और भोग विलास जैसी इच्छाओं से दूर रहता है, अधिकांश समय भक्ति

और उपासना में गुजारता है, और यह सब वह केवल खुदा की खुशनुदी हासिल करने के लिए करता है, उसी मालिक के लिए वह अपनी इच्छाओं-आवश्यकताओं का त्याग करता है, इसीलिए उस मालिक ने रोज़े का बदला-सवाब भी बहुत ज़्यादा और निराला रखा है। एक अवसर पर हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने बताया कि बन्दों के प्रत्येक भले काम के लिए सवाब का एक नियम निर्धारित है, हर काम का बदला उन निर्धारित नियमों के आधार पर चुकाया जाएगा लेकिन रोज़ा इस कानून से अलग है। इसके बारे में अल्लाह तआला का फरमान है कि बंदा अपना खाना पीना और कामवासना को मेरे लिए कुर्बान करता है इसलिए रोज़े का बदला मैं स्वयं दूंगा।

एक अवसर पर हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने फरमाया अल्लाह की खुशनुदी हासिल करने के लिए जब बंदा रोज़ा रखता है तो उसके पिछले सभी पाप माफ कर दिये जाते हैं।

एक अन्य अवसर पर फरमाया “रोज़ेदार के लिए खुशी के दो विशेष अवसर हैं, एक खुशी उसे रोज़ा खोलने के

समय इस दुनिया में ही मिल जाती है और दूसरी खुशी आखिरत में खुदा के सामने उपस्थित होने पर मिलेगी।”

एक अन्य अवसर पर फरमाया “रोजा नरक की आग से बचाने वाली ढाल है और एक मजबूत किला है” (जो दोजख के अजाब से रोजेदार को सुरक्षित रखेगा)।

एक अन्य अवसर पर फरमाया— “रोजेदार के लिए स्वयं रोजा अल्लाह तआला से सिफारिश करेगा मेरे कारण इस बंदे ने दिन में खाना पीना और सहवास की इच्छा को छोड़ा था (सो इसे माफ किया जाए और पूरा-पूरा बदला चुकाया जाए) तो अल्लाह तआला रोजे की सिफारिश कुबूल फरमाएगा।

उपरोक्त हदीसों में रोजे के जो महत्व बयान हुए हैं उनके अतिरिक्त एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि रोजा इंसानों को अन्य हैवानों से अलग करता है। जब दिल चाहा खा लिया, जब मन चाहा पी लिया, और जब चाहा सहवास कर लिया, यह पशुओं—हैवानों का स्वभाव है। दूसरी ओर खाने पीने और सहवास की इच्छा का न होना, यह फरिश्तों के गुण हैं। अतः रोजा रख कर इंसान अन्य पशुओं से अलग और श्रेष्ठ सिद्ध होता है, साथ ही फरिश्तों के स्वभाव पर अमल करके कुछ उनसे समानता प्राप्त

कर लेता है। जैसा कि कुरआन में अल्लाह तआला ने कहा है कि रोजे से तकवा, परहेजगारी यानि पवित्र आचरण के गुण पैदा होते हैं, यह एक बड़ा लाभ है जो रोजे का ही बदला है। रोजे के द्वारा इंसान को अपनी हैवानी इच्छाओं पर काबू पाने की शक्ति प्राप्त होती है, अल्लाह तआला के आदेशों का पालन करने और अपने मन को मनमानी करने से रोकने की आदत पड़ती है, जिस से आत्मा बलवान होती है, रूहानी तरक्की होती है। परन्तु यह सब लाभ तभी प्राप्त हो सकते हैं जब रोजा रखने वाला स्वयं भी लाभ प्राप्त करने का इच्छुक हो और रोजे की हालत में उन सब बातों का ध्यान रखे जिन का निर्देश हजरत मुहम्मद सल्ल० ने दिया है, अर्थात् खाने पीने के अतिरिक्त प्रत्येक छोटे बड़े गुनाह से बचे, न झूठ बोले, न गीबत करे, न लड़े झगड़े, न गाली गलौज करे, यदि कोई अन्य व्यक्ति उस से झगड़े, गालियां दे तो भी वह उस से न उलझे, बस इतना कह कर बात खत्म कर दे कि मैं रोजे से हूँ। एक बार हजरत मुहम्मद सल्ल० ने फरमाया कि जो व्यक्ति रोजे की हालत में भी झूठ और मक्कारी न छोड़े तो अल्लाह को उसके खाना पीना छोड़ने की कोई जरूरत और कोई परवाह नहीं। एक अन्य अवसर पर

फरमाया “कितने ही ऐसे रोजेदार होते हैं, जिनके रोजे का प्रतिफल भूख प्यास के अतिरिक्त कुछ नहीं होता, क्योंकि वे बुरी बातों और बुरे कामों से नहीं बचते”।

निष्कर्ष यह कि रोजे के प्रभाव से रूहानी तरक्की, अल्लाह तआला की मुहब्बत उसके एहकामात को बजा लाने में आसानी, हैवानी इच्छाओं और विचारों पर नियंत्रण हासिल होता है।

रमज़ान के महीने में एक रात है जो शबेकद्र कहलाती है इस रात में की जाने वाली इबादत का महत्व एक हज़ार महीने की इबादत से भी अधिक है। आदि काल में इंसान की उम्र सैकड़ों वर्ष हुआ करती थी, उन लोगों को सैकड़ों वर्ष इबादत का अवसर मिला करता था। हजरत मुहम्मद सल्ल० के जमाने में लोगों ने अफसोस प्रकट किया कि हम लोग उस जमाने के लोगों की बराबरी कैसे कर सकते हैं जब कि हमारी आयु इतनी लम्बी नहीं होती। तब अल्लाह तआला ने इस जमाने के अपने बंदों को वरदान स्वरूप यह रात दी। इस रात में इबादत करने वालों को एक हज़ार महीनों की इबादत से बढ़ कर सवाब मिलता है। मगर इस रात का लाभ उसी को मिलता है जो उसका इच्छुक और खुदा का सच्चा शैदाई होता है। क्योंकि

अल्लाह तआला ने इस रात का निर्धारण गुप्त रखा है। निश्चित रूप से इस की तारीख की घोषणा न कर के केवल उसके महत्व को बयान किया गया है। और हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने यह संकेत दिया है कि वह रमजान के महीने की अंतिम दस रातों में से विषम (ताक) रातों की कोई एक रात होती है। अर्थात् 21,23,25,27,29वीं रात में से कोई एक रात। यकीनी तरीके पर इसे पाने का एक ही तरीका है कि रमजान के महीने की

आखरी दस रातों को इबादत में मशगूल रह कर गुजारा जाय। हजार महीने की इबादत का सवाब एक ही रात में पाने के लिए दस रातों में खुदा को जम कर याद कर लिया जाए तो यह सौदा मंहगा नहीं है।

उस मालिक को राजी करने के लिए हर जमाने और हर इलाके में ऋषियों मुनियों और भक्तों ने वर्षों कष्ट झेल कर उसका नाम जपा है। क्या इस जमाने के हम पापी इंसान इतना भी नहीं कर सकते कि साल भर

में केवल दस रातें उस खालिक व मालिक पालनहार की इबादत में गुज़ार दें।

रमजान का महीना शुरू होने से एक दिन पहले मुहम्मद सल्ल० ने फरमाया था कि तुम्हारे ऊपर एक महीना आने वाला है जिसमें एक मख्सूस (विशिष्ट) रात है जो हज़ार महीनों से अफजल (उच्चतम) है, जो व्यक्ति इस रात से महरूम (वंचित) रह गया, गोया सारी ही खैर (भलाई) से महरूम रह गया।



ईद के दिन की 13 सुन्नतें

1. सुबह सवेरे उठना। 2. गुस्ल करना।
3. मिस्वाक करना। 4. खुशबू लगाना।
5. शरीयत के मुताबिक अपने को बनाना संवारना।
6. उम्दा किस्म के साफ़ सुथरे जो मुयस्सर हों कपड़े पहनना।
7. ईदगाह जाने से पहले कोई मीठी चीज़ छोहारे वगैरा खाना।
8. ईदगाह जाने से पहले सदक़-ए-फित्र अदा करना।
9. ईद की नमाज़ ईदगाह में जा कर पढ़ना।
10. ईदगाह बहुत सवेरे जाना।
11. ईदगाह एक रास्ते से जाना और दूसरे रास्ते से वापस आना।
12. पैदल जाना।
13. नमाज़े ईद को जाते वक़्त धीमी आवाज़ से तकबीर पढ़ते हुए जाना—
“अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर, लाइलाहा इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर व लिल्लाहिल हम्द”।



समान सिविल कोड और मुसलमान

हज़रत मौलाना सय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी रहो

बहुत दिनों से समान सिविल कोड का संदर्भ देकर मुसलमानों के पर्सनल ला में परिवर्तन वाद-विवाद का विषय बना हुआ है। यह समझा जाता रहा और जनता को भी यकीन दिलाया जाता रहा है कि मुसलमानों का पर्सनल ला बहुत जालिमाना और पुराना है और यह समय के साथ नहीं चलता। इसके स्पष्टीकरण से पूर्व कि मुसलमानों का पर्सनल ला समय की जरूरत के खिलाफ नहीं है, यह स्पष्ट करना जरूरी है कि स्वयं देश के बहु संख्यक समुदाय की विभिन्न जातियों में अलग-अलग सामाजिक कानून लागू हैं, इनको अपने रीति-रिवाजों को बनाये रखने पर इस्मर है और संविधान में भी इसकी जमानत दी गयी है। इनको कोई नहीं कहता कि वह पुराने हैं और एक दूसरे से भिन्न हैं और उनमें तालमेल नहीं है। जब आवाज उठती है तो मुसलमानों के ही बारे में उठती है। हालांकि इनका सामाजिक नियम और पर्सनल ला बड़ा ही विस्तृत और उलझनों को दूर करने वाला है और जीवन की

कठिनाइयों का इस में उत्तर मिलता है। दुख की बात है कि गैर इस्लामी बुद्धिजीवी इस पर निष्पक्षता से विचार नहीं करते।

कुछ वर्ष पूर्व "तलाक" के प्रश्न पर न्यायपालिका की आड़ में मुसलमानों के पर्सनल ला पर आक्रमण किया गया था। लेकिन आल-इण्डिया मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड के निर्देशन में मुसलमानों के जज्बात और विचार जब सामने आये, तो आखिर सरकार को उनकी बात माननी पड़ी।

अब आवाज दूसरी शादी को लेकर उठाई जा रही है यह बार-बार की छेड़छाड़ मुसलमानों के प्रति अन्याय और उनके जमहूरी और सेक्यूलर हुकूक की अनदेखी करना है जब कि वह इस देश की आबादी का लगभग 20 प्रतिशत है इसके लिए भारत के संविधान में उनके धार्मिक हुकूक का ध्यान भी रखा गया है, इसकी अनदेखी कर के बार-बार नई बातें क्यों की जाती हैं?

मुस्लिम पर्सनल ला और विवाद:-

मुस्लिम पर्सनल ला के जो मसले विशेषकर विवाद का प्रश्न

बनाये जाते हैं उनमें निकाह, तलाक, विरासत और पत्नियों की संख्या के मामले उल्लेखनीय हैं बल्कि इन में तलाक और पत्नियों की संख्या पर अधिक बल दिया जा रहा है। जहां तक तलाक का प्रश्न है, इस्लामी शरीअत में इसको बहुत मजबूरी की हालत में अनुमति दी गयी है। हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) (अल्लाह की उन पर रहमत हो) ने फरमाया है कि जिन बातों को जायज़ किया गया है उनमें सबसे बुरी बात तलाक है। यह हल ऐसे अवसर के लिए है जब पति-पत्नी का साथ रहना असम्भव हो जाये। ऐसी स्थिति में पत्नी का अलग हो जाना ही, उचित है। इसके लिये शरीअत में पुरुष को अलाहदगी का निर्णय लेने का हक दिया गया है जो तलाक, जिसका अर्थ है छोड़ देना, के रूप में इस्तेमाल होता है। यदि पत्नी चाहे तो वह काजी के यहाँ शिकायत करके अलाहदगी ले सकती है जिसे "खुला" कहते हैं।

मुस्लिम धर्म में विवाह:-

इस संदर्भ में निकाह के बारे में यह बात भी समझ लेने

की है कि हिन्दू धर्म और मुस्लिम धर्म में "विवाह की हैसियत बहुत भिन्न है। हिन्दू धर्म में पति और पत्नी का विवाह के समय जो गठजोड़ होता है वह अटूट होता है। यहां तक कि पति की मृत्यु होने पर भी यह सम्बन्ध नहीं टूटता। ऐसे में उनके यहां "तलाक" का कोई प्रश्न नहीं उठता, परन्तु मुसलमानों में "निकाह एक नियमित "एग्रीमेंट" है जो बाद में आपस का जोड़ न रहने और एक दूसरे को बर्दाश्त न कर सकने की सूरत में समाप्त किया जा सकता है। परन्तु यह "एग्रीमेंट" या "पैक्ट" करने और इसे समाप्त करने के लिये कड़े नियम निर्धारित हैं। तलाक हो जाने के बाद इस्लाम में पत्नी, पत्नी नहीं रहती इसी लिए उसकी रोजी-रोटी का भी प्रश्न नहीं उठता हां, अंतिम बार तलाक दे कर भेजते समय खुशदिली पैदा करने के लिए कुछ देकर रुखसत किया जाता है। तलाक या खुला के बाद पत्नी विवाह से पहले की हालत में लौट आती है और वह दोबारा अपने मैके की हो जाती है। इसलिए तलाक इस्लामी कायदे के अनुसार कोई मुसीबत की बात नहीं है। इसीलिए इस्लाम में हर प्रकार की ताकीद है कि तलाक मजबूरी पर दी जाये

और तीन माह के अन्दर सोच विचार कर दी जाये।

दूसरा प्रश्न पत्नियों की संख्या का है। यदि अध्ययन किया जाये तो इसकी प्रथा मुसलमानों से ज़्यादा गैर मुस्लिमों में मिलेगी। हिन्दू समाज में यह अधिक है, मुसलमानों के यहां यूं भी कम है क्योंकि इस्लाम ने इसे जरूरत और मुश्किलात का हल बताया है। जब कोई पति अपनी पत्नी को इस लायक न पाये कि वह उसकी उम्मीदों पर पूरी उतरे और इससे उसका जोड़ न बनता हो और तलाक देने में पत्नी का नुकसान हो या शरीफाना आचरण के विरुद्ध हो तो उसको बाकी रखते हुए पति को दूसरी पत्नी लाने का हक दिया गया है। परन्तु दोनों के हक यकसां अदा करने की शर्त रखी गयी है। इसी तरह कभी-कभी देश में मर्दों की कमी हो जाती है (जैसा कि महायुद्ध के बाद यूरोप में हुआ) महिलाओं की संख्या बढ़ जाती है। ऐसी परिस्थितियों का हल भी एक से अधिक पत्नी है जिससे कुकर्म से बचा जा सकता है।

सामाजिक जीवन में जो कठिनाइयां सामने आती हैं उनके लिये यदि शरीफाना हल न रखा जाये तो इंसानी

कमजोरी, गैर शरीफाना हल तलाश करती है और इसके नतीजे में अनैतिक यौन व्यवहार और जुल्म यहां तक कि हत्या की घटनाएं भी सामने आयी हैं और यह बढ़ रही हैं। पत्नी को जीवित जला देने की घटनाएं काफी घटित हो रही हैं क्योंकि पति अपनी धर्मपत्नी से सन्तुष्ट न होने पर जब तलाक नहीं देता तो जला देता है। कभी तअल्लुकात खराब हो जाने पर और कभी जहेज और जोड़े घोड़े न लाने पर। इसको इस्लाम में मना किया गया है। इस्लाम में निकाह का बोझ वास्तव में मर्द पर डाला गया है उसको महर देना पड़ता है यानी एक अच्छी रकम पत्नी को देनी होती है औरत पर इस्लाम ने कुछ जिम्मेदारी नहीं डाली है जो लोग इसके विरुद्ध करते हैं वह इस्लामी शरीअत पर अमल करने में कोताही करते हैं। इसमें इस्लाम का दोष नहीं है। इस्लामी शरीअत को यदि मुस्लिम दुश्मनी के प्रभाव से हट कर और गैर जानिबदाराना नजर से देखा जाये तो इस में ऐसी कठिनाइयों के शरीफाना हल रखे गये हैं बजाय इसके कि उनको बढ़ावा दिया जाये और उनसे लाभ उठाया जाये उन पर पाबन्दी लगाने की बात करना हालात

को खराबी की ओर ले जाने के बराबर है।

इस्लामी शरीअत की अहमियत—

जहां तक इस्लामी शरीअत की अहमियत की बात है तो वह मुसलमानों के लिए वैसी ही जरूरी है जैसे उनका अकीदा। शरीअत में तब्दीली करने या परिवर्तन को सही समझने के बाद मुसलमान मुसलमान नहीं रहता। इस प्रकार शरीअत की तब्दीली मुसलमान के लिए धर्म परिवर्तन है। इसलिए मुसलमानों ने सदैव अपनी शरीअत की सुरक्षा के लिए पूरे अज्म और हिम्मत का परिचय दिया है। जैसा कि तलाकशुदा महिला की रोटी—रोजी के प्रश्न में पेश आया और मुसलमानों ने एकजुट होकर उसके विरुद्ध आवाज उठाई और संसद के सदस्यों को समझाया, प्रधानमंत्री ने इसके महत्व को स्वीकार करने के बाद कानून बनाकर मुसलमानों को इससे मुक्त कर दिया। यहां यह समझ लेना आवश्यक है कि मुसलमानों को इस्लामी शरीअत का मानना वैसा ही जरूरी है जैसा अपने धर्म का मानना, शरीअत में तब्दीली को स्वीकार करना धर्म को बदलने की तरह का अमल करार पाता है इसकी वजह यह है कि मुसलमानों को पूरे स्पष्टीकरण के साथ कुरआन

मजीद में निर्देश दिये गये हैं कि वह अल्लाह के दिये हुए आदेश की पैरवी करें और जिन बातों से उन्होंने मना किया है इससे बाज आयें। कुरआन मजीद ही में एक जगह इस बात को भी स्पष्ट कर दिया गया है कि नबी करीम के जीवन के अंतिम दिनों में अल्लाह ने उनको संदेश भेजा— “अब दीन की तकमील कर दी गयी है यानी जो आदेश आ चुके हैं अब उस में परिवर्तन नहीं होगा और कुरआन में ही एक जगह कहा गया है कि अल्लाह के यहां दीन यानी धार्मिक उपदेश इस्लाम के ही हैं और जो भी इस्लाम के आदेशों से हट कर दूसरे आदेश मांगेगा तो खुदा के यहां उसकी यह बात स्वीकार नहीं की जायेगी।

फिर इससे बढ़ कर यहां तक हुआ कि नबी ने कहा कि देखो किसी समय मेरे पास दो वादी अपना मामला लाते हैं कभी एक वादी अपने तर्क दलीलों के साथ अच्छे ढंग, से प्रस्तुत करता है दूसरा इस मामले में कमजोर पड़ता है ऐसी सूरत में यह सम्भव है कि अपना मामला जिसने जोरदार तौर पर पेश किया है उसकी बात को सच समझ कर निर्णय दे दूं तो सुन “लो कि मेरे फैसले से उसका हक नहीं बन जायेगा। यदि इस

से लाभ उठायेगा तो गोया आग के अंगारे ले रहा है। चुनांचे इस्लाम में शरीअत के आदेशों की पाबन्दी की इसी तरह ताकीद की गयी है और इसको इस्लाम के लिए बुनियाद करार दिया गया। यह आदेश कुरआन मजीद में और नबी के उपदेशों में और फैसलों में मिलते हैं इनको मानना, मुसलमान होना है और उनका इन्कार करना या बदल देना अपने को इस्लाम से खारिज कर देना है। इसलिये मुसलमानों को अपनी शरीअते इस्लामी को कायम रखने और तब्दील न होने देने पर इसरार है क्योंकि यह मसला उनके मुसलमान, रहने न रहने का बन जाता है।

हिन्दुस्तान का संविधान हिन्दुस्तानियों का संविधान है— इनमें हिन्दू भी हैं और मुसलमान भी, सिख भी हैं और ईसाई भी, जैनी भी हैं और बौद्ध भी। संविधान में अपने अपने धर्म के अनुसार जीवन बिताने का हक सबके लिए स्वीकार किया गया है। साथ ही समान सिविल कोड की आवश्यकता भी बताई गई है परन्तु सब के धार्मिक हक को स्वीकार किया गया है। इसलिए समान सिविल कोड इस हक को समाप्त करके ही हो सकता है।



ऐलाने मिल्कियत व अन्य विवरण फार्म-4 नियम-8

प्रकाशन का स्थान	—	नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग, लखनऊ-7
प्रकाशन अवधि	—	मासिक
सम्पादक	—	सैय्यद मो0 गुफ़रान नदवी
राष्ट्रीयता	—	भारतीय
पता	—	नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग, लखनऊ-7
मुद्रक एवं प्रकाशक	—	मोहम्मद ताहा अतहर
राष्ट्रीयता	—	भारतीय
पता	—	223 बगरिया दुबग्गा, काकोरी, लखनऊ, उ0प्र0-227107
मालिक का नाम	—	मजलिसे सहाफत व नशरियात

मैं, मोहम्मद ताहा अतहर प्रमाणित करता हूँ कि उपरोक्त विवरण मेरे विश्वास व जानकारी में सही हैं।

अपने पाठकों से

- सच्चा राही आपको कैसा लगा आप अपनी राय से अवगत करें, हम आपके पत्रों की प्रतीक्षा में रहते हैं। हम आपके सुझाओं का स्वागत करते हैं।
- हम अपने सम्मानित लेखकों से अनुरोध करते हैं कि वह सामाजिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक, वैज्ञानिक, भौगोलिक विषयों पर अपने मूल्यवान लेख लिख कर हमें भेजें, हम आपके शुक्र गुज़ार होंगे।
- आप अपने लेख सरल भाषा में लिखें तथा विषय स्पष्ट हों, जो पाठकों को आसानी से समझ में आ सकें।
- आप सच्चा राही के नये ग्राहक बना कर हमारा सहयोग करें।
- आप अपनी आवश्यक दीनी समस्याएं लिखें हम उनके समाधान लिख कर सच्चा राही में प्रकाशित करेंगे।
- आप अपने लेख भेजने के लिए उप सम्पादक के ☎ नं0 9450784350 का प्रयोग करें।

ईद- भाईचारे का त्योहार

डॉ० नजमुस्साकिब अब्बासी नदवी

इस्लाम धर्म के दो त्योहार ईद—उल—फित्र और ईदुल अजहा (बकरीद) प्रेम, त्याग, करुणा और सौहार्द के प्रतीक हैं, जो सभी को गले मिलकर गिले—शिकवे भुलाने और भाईचारे को मजबूत करने का संदेश देते हैं। यह पवित्र त्योहार दान, समानता और एकता को बढ़ावा देता है, जो समाज में शांति स्थापित करते हुए सभी को एक साथ मिलकर खुशियां बांटने के लिए प्रेरित करता है। ईद सिर्फ नमाज़ का त्योहार नहीं है, बल्कि यह आपस में मिलकर प्रेम फैलाने का अवसर है। यह सामाजिक दूरियों को मिटाकर एकता का संदेश देता है। ईद के मौके पर लोग दुश्मनी और नफरत भूल कर एक—दूसरे के गले लगते हैं, जो प्यार और सौहार्द को बढ़ावा देता है।

ईद की नमाज़ से पहले गरीबों और जरूरतमंदों को फितरा देना अनिवार्य है, जो समाज में आर्थिक समानता और जरूरतमंदों के प्रति करुणा का भाव सिखाता है। ईद की सेवइयां, नये कपड़े और उपहारों का आदान—प्रदान परिवार, दोस्तों और पड़ोसियों के बीच भाईचारे

के बंधन को मजबूत करता है। ईद के दिन सामूहिक नमाज़ अमन, शांति और एकता का संदेश देती है, जो यह बताती है कि हम सब एक हैं। ईद का मुख्य संदेश इंसानियत के प्रति प्रेम और एकता है, जो भाईचारे के माध्यम से समाज को एक सूत्र में पिरोता है। ईदउल फित्र को खास बनाता है।

सदक—ए—फित्रः—

अपने आसपास गरीब लोगों को दी जाने वाली वह पूंजी, जिससे हर कोई यह त्योहार मना सके। इस रकम से वह भी अपनी पसंद के पकवान और कपड़े ले सके। आप ईद को गौर से देखें तो फित्रा की राशि को अनाज की तौल पर मापने को कहा गया है। जैसे जौ, गेहूं, खजूर या किशमिश वगैरह। हर एक को अपनी हैसियत के हिसाब से इसमें से कोई भी चीज चुनकर, उसकी एक नाप के मूल्यों के बराबर राशि दूसरे गरीब को देना अनिवार्य है। ईद उल फित्र का मतलब ही है, प्राकृतिक स्वभाव की ओर लौटना। यानि जहां बराबरी हो, सबके हिस्से का भोजन हो, सबके तन का कपड़ा हो, सबके

सरों पर छतें हों। यह सब फित्र की पाबंदी से होगा। इसलिए हर परिवार के छोटे—बड़े प्रत्येक सदस्य का फितरा निकाला जाता है।

ईदुल फितर पवित्र रमजान के खत्म होने के बाद का त्योहार है। ये एक महीने की कठिन इबादत और त्याग के साथ रब के सामने संपूर्ण समर्पण के बाद का त्योहार है। ईद को अगर रमजान की आध्यात्मिक दृष्टि से देखें, तो यह एक ऐसा उपहार है, जो आपको एक कठिन त्याग और समर्पण के बाद मिला है। जिस तरह रमजान का जीवन में एक उद्देश्य है, उसका एक दर्शन है, एक दृष्टि है, उसी प्रकार ईद का भी एक उद्देश्य है, एक दर्शन है और एक दृष्टि है। ईद एक ऐसा आध्यात्मिक संदेश देती है, जिसमें संपूर्ण मानवता की भलाई का संदेश है। सुबह ईद की नमाज़ से पहले ही प्रत्येक मुसलमान को फित्रा की रकम दूसरे कमजोर व्यक्ति को देनी होती है। एक तरफ तो जकात और फित्रा की धनराशि से आर्थिक बराबरी का संदेश दिया गया है। दूसरी ओर ईद के रोज हर एक से बराबर से गले

मिलकर सारे भेद भुलाने का संदेश दिया गया है। अगर गौर से देखें तो सामाजिक बराबरी के लिए आपस में गले मिलना सबसे बड़ा रास्ता है। जब आप ईद की खुशी में एक-दूसरे को बधाई देते हैं, तो उसमें गले मिलना उसका एक हिस्सा है। उस समय चाहे कोई राजा हो या प्रजा, चाहे कोई गुरु हो या शिष्य, चाहे पिता हो या पुत्र, चाहे अमीर हो या गरीब, शक्तिशाली हो या फिर कमजोर, आपस में बराबरी से गले मिलते हैं। बराबरी और भाईचारे का यह संदेश ईद का सबसे पवित्र संदेश है। यह मानवता के लिए मानव मात्र से प्रेम और उसके सम्मान व बराबरी को बनाए रखने का त्योहार है। ईद की सेवई चाशनी के साथ घुलकर संदेश देती हैं कि जिस ईश्वर ने तुम्हारी कड़ी इबादत को देखा है, उसने तुम्हें ईद की सेवइयों की मिठास भी बख्शी है। यदि तुम जीवन भर अनुशासन का पालन करोगे, आध्यात्म की ओर मन लगाओगे, सांसारिक लोभ से खुद को दूर करोगे, मानव कल्याण को प्राथमिकता दोगे तो तुम्हारा सारा जीवन ईद की सेवई की मिठास से भर जाएगा। ईद एक दूसरे को माफ करने का भी त्योहार है। भाई

भाई के गले शिकवे दूर करने का अवसर है, तमाम बुराई पीछे छोड़कर गले मिलकर चलने की सीख भी ईद देती है। अपनी की हुई गलती या जिस किसी का आपने दिल दुखाया हो, उससे माफी मांगिये। उसके गले लगिये और प्रायश्चित कीजिये कि आप कभी दोबारा ऐसा नहीं करेंगे। कोई आपसे माफी मांगे, तो आप उसे माफ कीजिये, आगे बढ़ कर गले लगाइये और कहिए, जिन्दगी बड़ी छोटी है। हम इस सेवई की मिठास के साथ इसे दोबारा खूबसूरत रास्तों पर लाते हैं। पैगम्बर हजरत मुहम्मद सल्ल० ने भी माफ करने को सबसे बेहतरीन रास्ता कहा है। ईद इसलिए और खास हो जाती है कि यह पूरे साल आंख चुराने वालों को भी एक मौका देती है कि गले मिलकर, आपस के गिले शिकवे दूर कर लो। कहा जाता है कि ईद मानवीय आध्यात्मिक ऊंचाई का त्योहार है। जो एक कठिन प्रशिक्षण अर्थात् पूरे महीने के रोजा रखने के बाद आता है। दरअसल ईद अल्लाह की तरफ से एक त्योहारी या ईदी है, जैसे हम अपने बच्चों को ईदी देते हैं वैसे ही अल्लाह भी हमें पूरे महीने रोजा रखने की खुशी में ईद के रूप में ईदी देता है।

रमजान से ईद तक पूरा एक सफर है, जिसमें करुणा, त्याग, समर्पण, अनुशासन, भाईचारा, बराबरी, एकता और सहयोग गूंथे हुए हैं। इन्हें आत्मसात करना चाहिए, यही ईद की मुबारकबाद है। ईद का ये त्योहार इस्लामी कैलेंडर के अनुसार शव्वाल माह की पहली तारीख को मनाया जाता है। इस्लामी कैलेण्डर के सभी महीनों की तरह यह भी नए चांद के दिखने पर शुरू होता है। मुसलमानों का यह त्योहार पूरे विश्व में पूरे हर्षोल्लास से मनाया जाता है। ईद के दिन प्रत्येक मुसलमान अच्छे कपड़े पहन कर 2 रकात नमाज़ पढ़ने ईदगाह या किसी जुमा मस्जिद में जाता है, वहां इमाम ईद के संबंधित संबोधन देता है और लोगों को ईशभय की ओर बुलाता है। इसी तरह जिन लोगों ने किसी कठिनाई के कारण रोजे नहीं रखे हैं वह ईद के बाद किसी भी महीने में कजा रोजे के रूप में उसे रख सकते हैं। हालांकि इन रोजों का महत्व उतना नहीं होता, इसके अलावा रोजा ना रख पाने की विशेष स्थिति में व्यक्ति अपनी एक दिन की पूरी खुराक किसी गरीब या जरूरतमंद को दे सकता है।



आपके प्रश्नों के उत्तर

—मुफ्ती मुहम्मद ज़फ़र आलम नदवी

प्रश्न: शुगर का ऐसा मरीज जिस को रोज़ा रखना बहुत दुशवार (कठिन) हो, बेहोश हो जाने का खतरा हो, ऐसी हालत में उसके लिए रमज़ान के रोज़ों का क्या हुक्म है?

उत्तर: शुगर का ऐसा मरीज रमज़ान के रोज़े न रखे और अगर यह अन्देशा हो कि आगे चल कर भी मरज ठीक न होगा तो छूटे हुए रोज़े का फ़िदया दे लेकिन अगर बाद में रोज़े रखने के लायक हो गया तो छूटे हुए रोज़ों की कजा करना होगी उस का फ़िदया सदका हो जाएगा।

(देखिए ज़ामिउर्रूमूज़: 1 / 16)

प्रश्न: दूध पिलाने वाली औरत के लिए रमज़ान के रोज़ों का क्या हुक्म है?

उत्तर: दूध पिलाने वाली औरत को रोज़े रखने में अगर उसको और उसके बच्चे को तकलीफ़ पहुँचे तो वह रमज़ान के रोज़े न रखे बच्चे का दूध छूटने के बाद छूटे हुए रोज़े पूरे करे।

प्रश्न: तरावीह की नमाज़ का शरई हुक्म क्या है? कुछ लोग उसे वाजिब कहते हैं तो कुछ सुन्नत कहते हैं अस्ल हुक्म क्या है?

उत्तर: जिस पर नमाज़ फ़र्ज है उस पर तरावीह की नमाज़ सुन्नत मुअक्कदा है लेकिन यह नमाज़ जमाअत से पढ़ना सुन्नत मुअक्कदा अलल किफ़ाय़ा है अर्थात् अगर कुछ लोग जमाअत से पढ़ लेंगे और बाकी लोग अपनी अलग पढ़ेंगे तो सब की सुन्नत अदा हो जायेगी अलबत्ता जो लोग मस्जिद में या घर में अकेले तरावीह की नमाज़ पढ़ेंगे उनको जमाअत का सवाब न मिलेगा।

प्रश्न: क्या औरतों के लिए भी तरावीह की नमाज़ पढ़ना ज़रूरी है?

उत्तर: औरतों के लिए तरावीह की नमाज़ उसी तरह सुन्नत मुअक्कदा है जिस तरह मर्दों के लिए, अलबत्ता उन पर जमाअत से तरावीह पढ़ना सुन्नत मुअक्कदा नहीं है उनके लिए बेहतर है कि वह अपने घरों में अकेले अकेले तरावीह की नमाज़ अदा करें।

(फ़तावा हिन्दीया:1 / 106)

प्रश्न: रमज़ान के आखिरी अशरे (दहे) के एतिकाफ़ का क्या हुक्म है?

उत्तर: रमज़ान के आखिरी अशरे का एतिकाफ़ सुन्नत मुअक्कदा अलल—किफ़ाय़ा है यानी अगर मुहल्ले का एक आदमी भी एतिकाफ़ करले तो सबकी तरफ से सुन्नत अदा हो जायेगी लेकिन अगर कोई भी एतिकाफ़ न करे तो सब सुन्नत छोड़ने के गुनहगार होंगे।

(हिदाया: 1 / 229)

प्रश्न: सदक—ए—फ़ित्र किन लोगों पर वाजिब है? और उसकी मिकदार क्या है?

उत्तर: आकिल व बालिग (बुद्धिमान तथा व्यस्क) मुसलमान जो ईदुल फ़ित्र के दिन अपनी बुन्यादी (मौलिक) ज़रूरतों के अलावा 612 ग्राम चाँदी या उसकी कीमत का मालिक हो उस पर सदक—ए—फ़ित्र अपनी और अपने ना बालिग बच्चों की तरफ से अदा करना वाजिब है।

(फ़तावा हिन्दीया:1 / 191)

प्रश्न: एक बड़े कस्बे के लोगों ने कमज़ोर, बीमार और बूढ़े लोगों के लिए ईद की नमाज़ का कस्बे ही की मस्जिद में इंतज़ाम किया और जो कमज़ोर

और बीमार आदि नहीं थे उनके लिए आबादी से बाहर ईदगाह में, क्या ऐसा इंतजाम करना सही है, क्या इनकी नमाज़ हो जाएगी?

उत्तर: ईद की नमाज़ ईदगाह में पढ़ना सुन्नते मुवकिकदा है, लेकिन कमजोरों, बीमारों के लिए जो ईदगाह न जा सकें उनके लिए कस्बे या शहर की मस्जिद में ईद की नमाज़ का इंतजाम करना सही है और नमाज़ दुरुस्त होगी।

(रद्दुल मुहतार 1/77)

प्रश्न: जिन लोगों ने रमज़ान में सदक-ए-फित्र अदा नहीं किया बल्कि ईद के दिन भी अदा नहीं किया तो क्या वह बाद में अदा कर सकते हैं या यह ज़िम्मे से उतर जाएगा?

उत्तर: सदक-ए-फित्र रमज़ान और ईद के बाद भी अदा किया जा सकता है, ईद का दिन गुज़रने के बाद भी उसकी अनिवार्यता खत्म नहीं होती बल्कि जितनी जल्द हो सके ईद के बाद भी अदा करदे।

प्रश्न: कुछ लोग ईदगाह लेट पहुँचे, उनकी ईद की नमाज़ छूट गई, उन लोगों ने उसी ईदगाह में दोबारा जमात से नमाज़ पढ़ी, क्या इन लोगों की नमाज़ हुई या नहीं?

उत्तर: अगर ईदगाह में जमात छूट गई तो दूसरी जगह जहां नमाज़ मिलने की उम्मीद हो वहां जा कर पढ़े, अगर ऐसा नहीं किया और वहीं दोबारा जमात करके नमाज़ अदा की तो नमाज़ तो हो जाएगी, लेकिन यह मकरूह और नापसंदीदा है।

(रद्दुल मुहतार 1/783)

प्रश्न: सद-कए-फित्र किन लोगों को दिया जायेगा?

उत्तर: सद-कए-फित्र जकात के हकदारों (गरीब मुसलमानों) को दिया जायेगा गैर मुस्लिम को नहीं दिया जा सकता। (दुरुल मुख्तार:3/325)

प्रश्न: जो लोग बीमारी या किसी और उज्र के सबब रोजा नहीं रख सके तो क्या उन पर भी सद-कए-फित्र वाजिब है?

उत्तर: अगर वह साहिबे निसाब (मालदार) हैं तो उन पर सद-कए-फित्र वाजिब है चाहे उन्होंने रोजा न रखा हो।

(देखिए रद्दुल मुहतार: 2/74)

प्रश्न: क्या बीवी का सद-कए-फित्र उसके शौहर पर वाजिब है?

उत्तर: बीवी अगर साहबे निसाब है तो जिस तरह उस पर अपने माल की जकात अदा करना फर्ज है उसी तरह अपना सद-कए-फित्र वह खुद अदा

करेगी अलबत्ता अगर शौहर उसकी तरफ से अदा कर देगा तो अदा हो जायेगा।

(अलमुगनी: 2/59, 60)

प्रश्न: ईदुल फित्र के दिन नमाज़ से पहले कुछ खाने का क्या हुक्म है?

उत्तर: ईदुल फित्र के दिन नमाज़ से पहले खजूर या कोई मीठी चीज खाना सुन्नत है। ईदुल फित्र के दिन नबीए करीम सल्ल० ईदगाह जाने से पहले कुछ मीठा खा लेते थे।

(बुखारी: 1/130)

प्रश्न: अगर किसी की ईद की नमाज़ छूट जाये तो उसकी कजा करेगा या नहीं?

उत्तर: ईदैन की नमाज़ों की कजा नहीं है अलबत्ता अगर अपनी ईदगाह में नमाज़ हो गई हो और दूसरी ईदगाह में नमाज़ मिल सके तो वहां जाकर अदा कर ले।

(दुरुल मुख्तार: 1/561)

प्रश्न: जकात किन लोगों पर फर्ज है?

उत्तर: हर आकिल बालिग मुसलमान मर्द हो या औरत जो 612 ग्राम चांदी या उसकी कीमत का मालिक हो उसको साहिबे निसाब कहते हैं उस पर जकात फर्ज है अलबत्ता जब

उसके माल पर साल गुज़र जायेगा तब जकात देना होगी। बेहतर यह है कि रमजान का महीना जकात के हिसाब के लिए मुकर्रर करे और रमजान ही में जकात अदा करदे।

प्रश्न: जकात किस हिसाब से निकाली जाती है?

उत्तर: जकात ढाई फीसद निकाली जाती है।

प्रश्न: अगर कोई पहली रमजान की रात में पूरे रमजान के रोज़ों की नीयत करे तो यह नीयत सही होगी या नहीं?

उत्तर: रमजान के हर रोज़े की नीयत उस की रात या सुबह को दोपहर से पहले तक करना जरूरी है एक साथ पूरे रमजान के रोज़ों की नीयत करना सही न होगी। इसी तरह एक से ज्यादा जैसे दो तीन रोज़ों की नीयत भी एक साथ की जाए तो सही न होगी।

प्रश्न: रोज़े के मुसतहब्बात क्या क्या हैं?

उत्तर: (1) सेहरी खाना
(2) रात ही से नीयत करना
(3) सेहरी आखिरी वक़्त में खाना लेकिन सुबहे सादिक़ से पहले फारिग हो जाये।
(4) इफ़तार में जल्दी करना जबकि आफ़ताब के गुरुब होने

का शुब्हा न रहे।

(5) गीबत, झूठ, गाली ग्लोज वगैरा बुरी बातों से बचना

(6) छुहारे या खजूर से और यह न हो तो पानी से इफ़तार करना।

प्रश्न: वह कौन कौन से उज़्र हैं जिन से रोज़ा न रखना जाइज़ हो जाता है?

उत्तर: (1) सफ़र यानी मुसाफ़िर को हालते सफ़र में रोज़ा न रखना जाइज़ है लेकिन अगर सफ़र में मशक़त (कठिनाई) न हो तो रोज़ा रखना अफ़ज़ल है।
(2) मरज़ यानी ऐसी बीमारी जिस में रोज़ा रखने की ताक़त न हो या बीमारी के बढ़ जाने का अन्देशा (भय) हो।

(3) बहुत बूढ़ा होना।

(4) गर्भवती होना जब कि औरत को या उसके बच्चे को रोज़े से नुक़सान पहुंचने का गुमाने गालिब हो।

(5) दूध पिलाना, जब कि दूध पिलाने वाली को या बच्चे को रोज़े से नुक़सान पहुंचता हो।

(6) रोज़े से इस कदर भूक या प्यास का गल्बा हो कि जान निकल जाने का अन्देशा हो जाये।

(7) माहवारी और प्रसवोत्तर की हालतों में रोज़ा रखना जाइज़ नहीं।

प्रश्न: अगर कोई बदबख़्त रमजान के कई रोज़े कस्दन तोड़ डाले तो क्या उस को हर रोज़े का कफ़ारा अलग अलग देना होगा?

उत्तर: अगर किसी ने एक रमजान के कई रोज़े कस्दन तोड़ डाले हैं तो उस पर एक ही कफ़ारा लाजिम आएगा अलबत्ता जितने रोज़े तोड़े हैं उनकी कज़ा भी जरूरी होगी।

प्रश्न: जो बूढ़ा आदमी रोज़ा रखने की ताक़त न रखता हो उसके लिए रमजान के रोज़ों के बारे में क्या हुक्म है?

उत्तर: ऐसा बूढ़ा आदमी जो रोज़े रखने की ताक़त नहीं रखता और वह इतनी इस्तिताअत रखता है कि रोज़ों का फ़िदया दे सके तो वह हर रोज़े के बदले में किसी ग़रीब (मिस्कीन) मुसलमान को दोनों वक़्त पेट भर के खाना खिलाए या हर रोज़े के बदले में एक किलो 600 ग्राम (1600 ग्राम) गेहूं या उसकी कीमत मुस्लिम मिस्कीन को दे लेकिन ऐसा बूढ़ा जो रोज़े की ताक़त भी नहीं रखता है और फ़िदया देने की इस्तिताअत भी नहीं रखता है तो अल्लाह तआला उसको मुआफ़ फरमाएंगे।



रमज़ानुल मुबारक का सबक

(फुजूल खर्ची से परहेज़ और खुदाई नेमतों का संतुलित उपयोग)

सैय्यद सुफ़यान अहमद नदवी लखनवी

अल्लाह तबारक व तआला की तरफ़ से मुसलमानों को रमज़ान का बेहतरीन तोहफ़ा अता किया गया है। यह एक ऐसा तोहफ़ा है जो अल्लाह ने किसी दूसरी क़ौम को नहीं अता किया। बेशक रमज़ानुल मुबारक हमारे रब की तरफ़ से हमारे लिए एक अज़ीम नेमत है। अब हमें ग़ौर करना चाहिए कि हम इस नेमत की किस तरह क़द्र करें, इस से किस तरह फ़ायदा उठाएं और इस से हमें क्या-क्या सीख मिलती है!

रमज़ानुल मुबारक में बन्दा सिर्फ़ खुदा की रज़ा के लिए एक तय वक़्त तक सब कुछ होते हुए भी खाने-पीने से अपने आपको रोक लेता है। इस खाने-पीने से रुकना हमें यह सबक देता है कि दुनिया में लाखों-करोड़ों इन्सान ऐसे भी हैं जो रोज़ाना की ज़िन्दगी में एक-एक रोटी के मोहताज हैं और उन्हें भूख की शिद्दत का जो एहसास होता है उस एहसास को हम अपने अन्दर महसूस करते हुए खुदा का शुक्र अदा करें कि अल्लाह ने हमें तरह-तरह की नेमतें दी

हैं। और उस गिज़ा में से जिस से हमें रोका गया है उसका कुछ हिस्सा उन मोहताजों तक ज़रूर पहुँचाने की कोशिश करें कि जिनको हमारे जैसी गिज़ा मिलती ही नहीं है।

रमज़ानुल मुबारक हमें यह भी सिखाता है कि आज के माहौल में होने वाली बड़ी-बड़ी दावतों में इन्सानों के ज़रिये खानों की बर्बादी और इसराफ़ पर रोक लगाई जाए क्योंकि आमतौर से देखने में आता है कि गिज़ा की एक ख़ासी मिक़दार शादी-ब्याह और दूसरी महफ़िलों के खानों में बर्बाद की जाती हैं जिस से मोहताजों की एक बड़ी तादाद का पेट भरा जा सकता है।

रमज़ानुल मुबारक में पानी पीने से रोका गया है ताकि हम प्यास की शिद्दत का एहसास करते हुए यह भी जान सकें कि जब इन्सान प्यासा होता है या उसे दूसरी ज़रूरतों में पानी के इस्तेमाल की ज़रूरत होती है तो उसे क्या-क्या परेशानियाँ उठानी पड़ती हैं, और जहाँ-जहाँ या जिस-जिस इलाक़े में पानी की कमी होती है वहाँ इन्सानों को

कितनी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है, लिहाज़ा हमें पानी की क़द्र करनी चाहिए, इसे ज़रूरत भर इस्तेमाल करते हुए इस नेमत पर खुदा का शुक्र भी अदा करना चाहिए कि उसने हमें पानी जैसी इतनी बड़ी नेमत बेहिसाब अता की है।

रमज़ानुल मुबारक में खाने-पीने को छोड़ देना हमें कुर्बानी की तरफ़ दावत देता है कि हम अगर कुछ वक़्त के लिए खाना-पीना छोड़ सकते हैं तो हम इसराफ़ और ग़ैर ज़रूरी चीज़ों को भी छोड़ सकते हैं, ऐसी चीज़ें जिनके बग़ैर भी हमारा काम चल सकता है उनको आसानी से छोड़ा जा सकता है।

रमज़ानुल मुबारक में हम कुछ वक़्त के लिए अपनी जायज़ फ़ितरी ख़्वाहिशों से भी रुके रहते हैं, इसका मतलब यह कि हम अपनी रोज़मर्रा की ज़िन्दगी में भी नाजायज़ ज़रियों से ख़्वाहिशों को पूरा करने से हमेशा के लिए रुक सकते हैं।

रमज़ानुल मुबारक में अगर हम कुछ वक़्त के लिए लड़ाई-

झगड़े और बुरे अलफ़ाज़ इस्तेमाल करने से रुक जाते हैं, बर्दाश्त और नमी का मामला करते हैं, तो आम दिनों में भी अपनी इसी आदत को बाकी रख सकते हैं। इस से यह भी सबक़ मिलता है कि रमज़ान के अलावा भी हम अच्छे बोल बोल कर वही अख़्लाक़ व अदब अपनाते हुए अपनी दुनियावी ज़िन्दगी, तिजारत और कारोबार को भी संवार सकते हैं।

रमज़ानुल मुबारक हमें इसराफ़ यानी फुज़ूलख़र्ची से बचने का सबक़ देता है, बचत करने और फ़ालतू चीज़ों के इस्तेमाल से रुक जाने का सबक़ देता है। जिसके ज़रिये हम अपने माल का एक अच्छा ख़ासा हिस्सा बचा कर उसी माल से ग़रीब और ज़रूरतमन्द लोगों की ज़रूरतों को भी पूरा कर सकते हैं।

रमज़ानुल मुबारक हमें यह भी सबक़ देता है कि जिस तरह हम रमज़ान में नमाज़ों की पाबन्दी, तिलावते कुरआन की पाबन्दी और दूसरी इबादतों की पाबन्दी करते हुए उन्हें अच्छी तरह अंजाम देते हैं तो रमज़ान के अलावा भी हम इन इबादतों को पाबन्दी के साथ अंजाम दे सकते हैं।

रमज़ानुल मुबारक से यह भी सबक़ मिलता है कि जिस तरह हम रमज़ान की रातों में तहज्जुद के ज़रिये, तौबा व इस्तिग़फ़ार के ज़रिये, शुक्रे इलाही के ज़रिये, दुआओं के ज़रिये और दूसरे ज़िक्र व अज़कार के ज़रिये खुदा से करीब होते हैं, अल्लाह से अपना ताल्लुक़ जोड़ते हैं उसी तरह हम रमज़ान के अलावा भी खुदा से अपने ताल्लुक़ को जोड़ सकते हैं और अल्लाह की क़ुरबत हासिल कर सकते हैं।

रमज़ानुल मुबारक से हमें यह भी सीख मिलती है कि जिस जज़्बे और शौक़ के साथ हम इस महीने में ख़ैर-ख़ैरात के कामों में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेते हैं, ग़रीबों और मोहताजों की मदद करते हैं, उसी जज़्बे और शौक़ को बाकी रखते हुए हम रमज़ान के अलावा भी इन आमाल को अंजाम दे सकते हैं।

जिस तरह हम दुनिया में किसी चीज़ का तजुर्बा हासिल करते हैं या प्रेक्टिकल करते हैं उसी तरह अल्लाह ने हमें साल के बारह महीनों में से एक महीना अपनी ज़ात और अपने नफ़्स पर प्रेक्टिकल व तजुर्बे के लिए तोहफ़े के तौर पर अता किया है ताकि हम इसके ज़रिये प्रेक्टिकल कर सकें और तमाम

ख़ैर व भलाई के कामों की ऐसी प्रेक्टिस और ऐसा तजुर्बा करें कि साल के बाकी ग्यारह महीनों में हमें इस तजुर्बे का फ़ायदा मिलता रहे और हमारी पूरी की पूरी ज़िन्दगी इसी ढंग से आगे बढ़ सके और हम दुनिया व आख़िरत में भी कामयाबी की तरफ़ ग़ामज़न हो सकें।

अलग़रज़ रमज़ानुल मुबारक का महीना हमें ज़िन्दगी में सादगी अपनाने, कम ख़र्च करने, इसराफ़ से बचने, अपने माल और अपनी ग़िज़ा में ग़रीबों का हिस्सा शुमार करने, बेकार और फ़ालतू बातों से दूर रहने, अल्लाह से करीब होने, दूसरों के लिए कुर्बानी देने, ज़िन्दगी के अकसर मामलों में अल्लाह और उसके रसूल के तरीक़े को अपनाने और खुदाई नेमतों के संतुलन को बरक़रार रखने का सबक़ देता है जिस से हमारी दुनिया की ज़िन्दगी संवरने के साथ-साथ हमारी आख़िरत भी संवरती है। अल्लाह तआला हम सबको रमज़ानुल मुबारक के मक़ासिद को हासिल करने वाला और अपने रब की मर्ज़ियात के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने वाला बनाए।

आमीन



सेहत का राज़

अब्दुल रशीद सिद्दीकी नसीराबादी

इस्लाम के अरकान सब, सेहत के मुहाफ़िज़ हैं।
नमाज़ के अरकान सब, सेहत के मुहाफ़िज़ हैं॥
पाक रहे मुस्लिम, ईमान की पहचान।
पाकी भी ज़रा देखो, सेहत के मुहाफ़िज़ हैं॥
नमाज़ में वजू भी, अरकान अहम है।
आज़ा बदन का धोना, सेहत के मुहाफ़िज़ हैं॥
नमाज़ का कयाम भी, सजदा भी रुकू भी।
कायदा में बैठना, सेहत के मुहाफ़िज़ हैं॥
जिक्र हो खुदा का, दुरुदो सलाम हो।
दिल को सुकून देता, सेहत के मुहाफ़िज़ हैं॥
कुरआन की तिलावत, रमजान के रोज़े।
इस का भी एहतमाम हो, सेहत के मुहाफ़िज़ हैं॥
कुरआन में हदीस में, दुनिया की भलाई है।
इसको अमल में लाना, सेहत के मुहाफ़िज़ हैं॥
दीन की दावत में, चलना बहुत ज़रूरी।
तबलीग़ की मेहनत भी, सेहत के मुहाफ़िज़ हैं॥
हज के सफ़र में चलना, अलाह का ध्यान रखना।
अरकान अदा करना, सेहत के मुहाफ़िज़ हैं॥
इस्लाम के अरकान को अपनाओ मेरे भाई।
सिद्दीकी कह रहा है, सेहत के मुहाफ़िज़ हैं॥



रमज़ान का अन्तिम दहा (आखिरी अशरा)

डॉ० हारून रशीद सिद्दीकी रह०

रमज़ान का अन्तिम दहा बहुत ही बाबरकत है, इस दहे में अल्लाह तआला जहन्नम की आग से बचा कर जन्नत में प्रवेश के फ़ैसले करते हैं, इस दहे में एक रात है जिसको लैलतुल कद्र कहते हैं लैलतुल कद्र ही में अल्लाह तआला ने पवित्र कुरआन को लौहे महफूज़ से आसमाने दुनिया पर उतारा था, फिर वहां से आवश्यकतानुसार थोड़ा-थोड़ा उतारा जाता रहा, यहां तक कि 23 वर्षों में पूरा कुरआन प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर उतार दिया गया।

लैलतुल कद्र ऐसी शुभ रात है कि अपने शुभ होने में हज़ार महीनों से बढ़ कर है, इस रात में अल्लाह के आदेश से हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम फरिश्तों के साथ उतरते हैं वह बन्दों के लिए हर प्रकार के अच्छे आदेश लेकर उतरते हैं, इस रात में पूरी रात सलामती उतरती रहती है यहां तक कि भोर हो जाये इस रात में जो इबादत की जाती है वह हज़ार महीनों से अधिक सवाब रखती है, परन्तु यह रात बन्दों से छुपा दी गयी है, यह रात आखिरी अशरे की विषम रातों में से किसी रात में आती है, छुपाई इसलिए गयी ताकि रोज़ेदार रमज़ान के अन्तिम दहे की सभी विषम रातों में जाग कर अल्लाह की इबादत

करें और अधिक से अधिक सवाब पायें और जब तमाम विषम रातों में जागेगा तो लैलतुल कद्र भी पा जायेगा, लैलतुल कद्र की खास दुआ यह है अल्लाहुम्म इन्नक अफुव्वुन तुहिब्बुल अफव फ़अफुअन्नी”

अनुवाद:- ऐ अल्लाह तू माफ करने वाला है, माफ करने को पसन्द करता है, तू मुझे माफ फरमा दे।

रमज़ान के अन्तिम दहे की एक मुख्य उपासना है जिसको एतिकाफ कहते हैं, रमज़ान के अन्तिम दहे में एतिकाफ सुन्नते मुअक्किदा अलल किफाया है यानी अगर महल्ले या बस्ती का कोई व्यक्ति एतिकाफ कर लेगा तो यह सुन्नत सब की तरफ से अदा हो जायेगी, और अगर कोई भी एतिकाफ न करेगा तो सुन्नत छोड़ने का सब पर गुनाह होगा।

एतिकाफ के लिए बीस रमज़ान की मग़रिब में एतिकाफ की नीयत से मस्जिद में दाखिल होते हैं और फिर मस्जिद ही में रहते हैं जब ईद का चाँद दिखता है तो मस्जिद से निकलते हैं, अलबत्ता शरई ज़रूरतों से मस्जिद से निकलते हैं अगर खाने का प्रबन्ध मस्जिद में न हो सके तो खाना खाने के लिए घर जा सकते हैं, पाखाना पेशाब या फर्ज़ गुस्ल के लिए मस्जिद से निकलेंगे वुजू के लिए भी

वुजूखाने तक जा सकते हैं वह पूरा हो जाने पर मस्जिद में आ जाएं, बाहर रुकें नहीं, बाकी अवकात मस्जिद में इबादत में गुज़ारे या नींद आये तो सो जाएं, पाँचों नमाज़ों जमाअत से पढ़ें नफलें पढ़ें, तिलावत करें, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दुरुद व सलाम पढ़ें और खूब दुआएं करें घर वालों के लिए दुआएं करें उम्मत के लिए दुआएं करें, मुल्क के लिए दुआएं करें, एतिकाफ करने वाला बहरहाल लैलतुलकद्र से लाभावित होता है, अल्लाह तआला एतिकाफ की तौफीक से नवाज़े, आमीन।

याद रहे शरई ज़रूरत के बिना मस्जिद से निकलते ही एतिकाफ टूट जायेगा, जिस शरई ज़रूरत से निकले उसके पूरा हो जाने के बाद बाहर रुके रहे तो एतिकाफ टूट गया, जब एतिकाफ टूट गया तो एतिकाफ सुन्नत की अदायगी नहीं हुई न उसका सवाब मिला, अलबत्ता जो इबादतों की उनका सवाब मिला, अब चाहे तो मस्जिद से निकल आये या नफ़ल एतिकाफ की नीयत कर ले और चाँद दिखने तक मस्जिद ही में रहे, नफ़ल एतिकाफ का सवाब लें, ज़ाइद इबादतों का सवाब लें, अल्लाह तौफीक से नवाज़े।

आमीन।



ज़कात की समाज में अहमियत व ज़रूरत

(मुहम्मद इक़बाल नदवी)

ज़कात एक अरबी शब्द है जिसका अर्थ होता है पाक करना, इसके माध्यम से उस व्यक्ति का माल पवित्र हो जाता है जो अपने माल की ज़कात निकालता है। यह इस्लाम के पाँच स्तंभों में से एक महत्वपूर्ण स्तंभ है, यह केवल एक धार्मिक कर्तव्य ही नहीं बल्कि एक सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था को संतुलित रखने का एक माध्यम भी है यह एक निश्चित कमाई और संपत्ति में से आमतौर पर ढाई फीसद निकाल कर गरीबों और कमज़ोर लोगों को दी जाती है, इसकी अहमियत को हम समाज में कई रूप में देखते हैं।

ज़कात गरीब और अमीर लोगों के बीच में आर्थिक खाई को कम करने में सहायता करती है क्योंकि जब सम्पन्न और मालदार लोग अपनी संपत्ति का कुछ हिस्सा निकाल कर ज़रूरत मंदों को देते हैं तो इससे निर्धन और कमज़ोर वर्ग की मूल आवश्यकताएँ पूरी होती हैं जैसे भोजन, वस्त्र, शिक्षा और चिकित्सा आदि। इससे समाज में करुणा भाई चारा और सहानुभूति की भावना उत्पन्न होती है एक दूसरे

की सहायता करने की प्रेरणा प्रदान करती है।

ज़कात आर्थिक विकास में भी सहायक होती है जब ज़रूरत मंदों को आर्थिक सहायता दी जाती है तो वह इससे छोटे मोटे व्यवसाय शुरू करके अपने और अपने परिवार के चेहरों पर खुशियाँ ला सकते हैं। और वह अपने पैरों पर खुद खड़े हो सकते हैं। हजरत उमर बिन अब्दुल अज़ीज रह0 जब खलीफा बने तो उन्होंने ज़कात की इस प्रकार अच्छी व्यवस्था की कि दो तीन वर्षों में वहां कोई ज़कात लेने वाला नहीं रहा लोगों के जीवन में बहुत परिवर्तन हुआ। दबे कुचले लोग भी इसके माध्यम से समाज की मुख्य धारा से जुड़ सकते हैं यदि ज़कात की व्यवस्था ठीक ढंग से लागू की जाए तो न जाने कितने लोग आत्म निर्भर बन सकते हैं।

धार्मिक दृष्टि से देखा जाए तो खुदा तआला ने पवित्र कुरआन में उन लोगों की तारीफ की है जो ज़कात समय पर अदा करते हैं और ईश्वर की खुशी प्राप्त करते हैं क्योंकि माल से इन्सान को बहुत प्यार

होता है लालच होता है और वह खुदा की आज्ञा का पालन करते हुए अपना धन खुदा के मार्ग में खर्च करता है। इन्सान को लालच और स्वार्थ से बाहर निकालने में ज़कात का बहुत महत्वपूर्ण योगदान होता है। कुरआन में कई स्थानों पर इसका वर्णन नमाज़ के साथ अल्लाह तआला ने किया है। जिससे इसकी महत्ता स्पष्ट होती है यह केवल एक धार्मिक कर्तव्य ही नहीं बल्कि एक न्याय पूर्ण संतुलित और करुणा मय समाज की नींव है यह मानवता समानता और सामाजिक ज़िम्मेदारी का संदेश देती है तथा समाज को मज़बूत और संगठित बनाने में इसका बड़ा योगदान होता है उम्मीद की एक ऐसी किरण है जो मुरझाये हुए चेहरों पर चमक पैदा करती है और नैतिक मूल्यों का विकास पैदा करती है। ज़कात देने वाले के अन्दर दया त्याग करुणा और सेवा जैसे गुणों को उत्पन्न करती है। जब लोगों की बुनियादी ज़रूरतें पूरी होती हैं तो समाज में अपराध कम होते हैं और नेक कार्यों की भावना बढ़ती है।

ज़कात से सम्बन्धित कुछ मुख्य बातें:—

1. यह केवल उन मुसलमानों पर फर्ज होती है जो मानसिक रूप से ठीक हों बाल्यावस्था को पार कर चुके हों और साहिबे निसाब (साढ़े सात तोला सोना या साढ़े बावन तोला चाँदी या दोनों में से किसी एक के बराबर धन संपत्ति) हो।

2. उस पर एक साल का बीत जाना ज़रूरी होता है।

3. ढाई प्रतिशत ज़कात निकाली जायेगी।

4. यह राशि उसकी मूल आवश्यकताओं (रहन सहन कपड़े, मकान दैनिक खर्च से अतिरिक्त हो) उस पर किसी तरह का कर्ज न हो अगर कर्ज अदा करने के बाद भी वह निर्धारित सीमा के बराबर धन दौलत का मालिक रहा तो ज़कात निकालना उस पर ज़रूरी होगा।

5. ज़कात देने वाला जिसको रक़म दे रहा है न उसको नीचा समझे और न ही उसकी गरिमा को ठेस पहुंचाए बल्कि प्यार व मोहब्बत से बिना ज़कात का नाम लिए भी उसको ये रक़म दे सकता है।

6. सबसे अच्छा है अपने उन गरीब रिश्तेदारों को दे जो उसके लेने के हक़दार हैं इसमें सवाब अधिक होता है माँ—बाप, दादा—दादी नाना—नानी, बेटा—बेटी,

पोता—पोती नवासा नवासी को ज़कात नहीं दी जाती है अगर यह ज़रूरत मन्द हों तो उनकी दूसरे माल से सहायता की जायेगी।

निम्न व्यक्तियों को ज़कात की रक़म दी जा कसती है। (सूर: तौबा आयत 60 में इसका वर्णन है:—

- फकीर बहुत गरीब व्यक्ति।
- मिस्कीन जो बहुत ही अधिक ज़रूरतमन्द हो।
- आमिल जो लोग ज़कात इकट्ठा करते और बाँटते हैं यानी वह लोग इसके कर्मचारी हों।
- मुअल्लफ़तुल कुलूब ऐसे लोग जो इस्लाम में नये नये प्रवेश किये हों या उसकी तरफ झुकाव हो।

○ गुलामों और दासों को आज़ाद करने में।

○ कर्जदार लोगों के कर्ज को चुकाने में।

○ अल्लाह के रास्ते में।

○ मुसाफ़िरोँ और परदेसियों पर।

इनके अलावा इस्लामिक शिक्षण संस्थानों में जहां गरीब और कमज़ोर छात्र रहते हों इसी प्रकार उन छात्रों पर जो उच्च शिक्षा के लिए कालेजों और विश्वविद्यालयों में पढ़ते हों और खर्च उठाने की क्षमता न हो अपने मित्रों पर या दूसरे ऐसे कार्यों पर जहां से गरीब लोग फ़ायदा उठाते हों।

(लेखक: माहद सिकरोरी, दारुल उलूम नदवतुल उलमा के उस्ताद हैं)।



अब ईद है

तूबा रहमान, लखनऊ

गीत खुशियों के गाएँ कि अब ईद है।
ग़मज़दों को हँसाएँ कि अब ईद है॥
रौशानी बाँटें अब हर तरफ़ प्यार की।
दिल किसी का न दुखाएँ कि अब ईद है॥
माहे रमज़ान के हम ने रोज़े रखे।
जी भर कर अब खाएँ कि अब ईद है।
यह न सोचें किसने दिल दुखाया कभी।
रूठों को भी मनाएँ कि अब ईद है॥
आप मामा हों, चाचा हों या भाई हों।
सबको गले लगाएँ कि अब ईद है॥
खर्च कर दें ग़रीबों, यतीमों पे भी।
बख़ील न बन जाएँ कि अब ईद है॥
रूपये जमा करके क्या करेंगे भला।
ख़ूब ईदी लुटाएँ कि अब ईद है॥

कारखाने का चक्कर

मायल खैराबादी

हम बच्चों को कहानी सुनने का शौक होता ही है, मगर चन्दा चाचा को कहानी सुनाने का भी बड़ा शौक है। शाम हुई, खाना खाया, चारपाई पर पहुँचे कि बस पुकार करने लगे, “अरे सहू मियाँ! हुक्का भर लाओ बेटे। अरी सरों! पान तो ला बेटा। ओ अन्नो बी! जरा पानी तो पिलाना भई। और ऐ सफ़फ़ो बी! तुम दान्त कुरेदने के लिये कोई तिनका लेती आना।”

इसी तरह एक एक का नाम लेते, जो पास जाता, उसे वहीं बैठा लेते। अब अगर अम्मी, चाहे अब्बू मियाँ, कोई लाख पुकारता, चाचा मियाँ हमको न छोड़ते। हमारे बदले अम्मी जान और अब्बू मियाँ को खुद, जवाब दे देते, “अरे क्या है क्या? क्यों बच्चों की पुकार पड़ी है? दिन भर के थके हारे अब जरा बैठे हैं गरीब कि आप लोगों ने नाक में दम कर दिया, इस वक़्त कोई नहीं आयेगा, अब मैं इन्हें अल्लाह रसूल की बातें बताऊँगा.....।”

चाचा मियाँ इस तरह कहते, और अम्मी जान या अब्बू मियाँ चाचा की बातें सुन कर मुस्करा देते और चुप हो जाते।

हम बच्चों को कहानी सुनने का शौक तो होता ही है, मगर कभी कभी हम सब खूब बनते या चाचा मियाँ को बनाने की कोशिश करते। हम चाचा से कहते, आज, कहानी सुनने को जी नहीं चाहता, आज कुछ और बातें कीजिये। मगर चाचा जवाब देते, “मूर्खता की बातें मत करो, आज ऐसी कहानी सुनाऊँ कि याद करो, वह मजा आये कि वर्षों न भूलो।” और फिर हम ध्यान दें या न दें, चाचा अपनी कहानी शुरू कर देते, “एक था बादशाह, हमारा तुम्हारा खुदा बादशाह..... आज चाचा मियाँ ने “हमारा तुम्हारा बादशाह” शुरू किया तो सहू मियाँ बोले, “चाचा मियाँ! बादशाह बादशाह की कहानियाँ तो आप रोज सुनाते हैं आज कोई ऐसी कहानी सुनाइये जिसमें यह नसीहत हो कि उसे सुनकर ये जो है ना! हमारी बजिया अन्नो बी! बड़ी सुस्त, तो ये मेहनती बन जायें।”

सुद्धू मियाँ से यह सुना तो अन्नो चहक कर बोली, “मैं क्यों होने लगी सुस्त, आप खुद कामचोर हैं, रोज स्कूल देर

करके जाते हैं।” और फिर सहू मियाँ और अन्नो बी में नोक झोंक होने लगी। यह देखा तो चाचा मियाँ ने कहा, चाहे सहू मियाँ सुस्त हों चाहे अन्नो बी, और चाहे कोई और, लो ऐसी कहानी सुनाऊँ कि जो सुने उससे शिक्षा प्राप्त करे।

यह कह कर चाचा मियाँ ने हमारे जवाब की प्रतीक्षा न की, झट कहानी शुरू कर दी। “अच्छा भई तो कारखाने के मालिक ने ढिंढोरा पिटवा दिया कि कारखाने में काम करने के लिये ऐसे बच्चों की जरूरत है जो लिखना पढ़ना जानते हों और उनकी उम्र चौदह साल से कम और सत्रह साल से ज़्यादा न हो.....

चाचा मियाँ ने इतना ही कहा था कि सरों बोली, “अरे अरे चाचा मियाँ! आज आप कहानी किस तरह कहने लगे? यह तो बताइये कारखाना कैसा था, और कारखाने का मालिक कौन था? वह लड़कों ही को काम पर क्यों लगाना चाहता था.....?”

अच्छा लो सुनो। चाचा मियाँ ने कहा, “अच्छा एक था सेठ, उसने एक ऐसा कारखाना

लेने का विचार किया जिसमें छोटे बच्चों के लिये तरह तरह की मिठाइयाँ बन सकें। लेकिन सेठ था बड़ा समझदार आदमी। वह जानता था कि लड़के कम मजदूरी पर काम के लिये मिल जायेंगे, और फिर वह यह भी चाहता था कि लड़के नौकरी चाकरी के धन्धों और फन्दों में न फंसे, काम काज और हुनर सीखें और बड़े होकर कोई अच्छा सा धन्धा कर सकें। नौकरी में तो बस गिनी बोटी नपा शोरबा, फिर नौकरी में आगर हाँ हुजूरी न करो तो निकाल दिये जाओ।”

“बड़ा अच्छा था सेठ!” सहू मियाँ बीच में बोल पड़े।

“और लड़कों पर कैसा प्यार था।” सरों ने भी अपना विचार व्यक्त किया।

“मगर था बड़ा समझदार।” अन्नो ने कुछ सोचते हुए कहा।

“अरे चुप भी रहो, सुनो तो फिर क्या हुआ।” सफ़फो ने सबको डाँटा। चाचा मियाँ जरा की जरा चुप हुए। फिर किसी की बात का कुछ जवाब दिये बिना कहानी शुरू कर दी, “अच्छा तो सेठ ने ढिंढोरा पिटवा दिया, शहर शहर गाँव गाँव मिठाई के कारखाने की बातें होने लगी। चारों तरफ से लड़के सेठ के पास पहुँचने लगे, इतने लड़के,

इतने लड़के कि बस लड़के ही लड़के, ऐसा जान पड़ता था जैसे जमीन से लड़के उबल रहे हैं और सेठ के बंगले के सामने अनगिनत लड़कों को देख कर ऐसा जान पड़ता था कि जैसे लड़कों का एक मेला लगा हुआ है।

शर्त

सेठ ने लड़कों की बड़ी आवभगत की। सबको वे मिठाइयाँ खिलाई जो वह कारखाने में तैयार कराना चाहता था। ये मिठाइयाँ सेठ ने नमूने के तौर पर विलायत से ताजा ताजा मंगवाई थीं। मिठाई खिलाने के बाद सेठ ने कहा, “कहो बच्चो! कैसी मजे की हैं ये मिठाइयाँ? भई यही मिठाइयाँ मैं अपने कारखाने में बनवाऊँगा, मगर मुझे डर है कि कहीं तुम एक तरफ बनाते जाओ, और दूसरी तरफ मजे ले लेकर खाते जाओ तो मैं क्या कर सकता हूँ, मुझे क्या पता चलेगा कि किसने कितनी मिठाई खा ली मैं हर वक़्त तो कारखाने में रहूँगा नहीं, फिर हर एक को हर वक़्त देखते रहना भी मेरे बस की बात नहीं, इसलिये मुझे ऐसे लड़कों की जरूरत है जो मेहनती भी हों और दयानतदार भी।”

“क्या हों? मेहनती और सुनते सवाल किया।?” अन्नो ने

कहानी सुनते “ऊँह, तुम टुब से बोले बिना नहीं रहतीं” सरों ने झुंझलाते हुए कहा, “कहानी सुनने नहीं देतीं।”

चाचा मियाँ ने बताया, “दयानतदार हों दयानतदार!” “दयानतदार लड़के कैसे होते हैं?” अन्नो ने फिर पूछा।

“अरी भिन्नो!” अब सफ़फो बी समझाने लगीं, दयानतदार उसे कहते हैं कि जैसे किसी को कोई चीज दी जाये और कहा जाये कि इसे रख लो, फिर जब उसे माँगे तो वह वैसी की वैसी वापस कर दी जाये, खर्च न कर डाली जाये, समझीं।”

“हाँ समझी मैं, कंजूस को कहते हैं ना? जैसे ये हैं हमारे सहू मियाँ।” अन्नो ने भोलेपन से कहा और सहू मियाँ ने गुस्से में उसका मुँह नोच लिया। बोले, “कंजूस आपसे ज़्यादा कौन है? अम्मी जान कोई चीज आपको देती हैं तो बस कंजूसी के मारे रखे रहती हैं, खा नहीं सकतीं आप, चींटे ही चाट जाते हैं।”

“और वह चींटा एक आप हैं।”

अन्नो ने भी गुस्से के साथ जवाब दिया। उनकी छप्पर झाड़ होने लगी तो फिर सफ़फो बी ने डाँटा, “अच्छा, अच्छा, ठीक तरह से कहानी सुनना हो तो सुनो, नहीं तो भागो यहाँ से।”

सफ़फो बी की धमकी

सुनकर दोनों चुप हुए और चाचा ने आगे की कहानी शुरू कर दी, "तो फिर सेठ ने लड़कों से कहा, भई मैं सब लड़कों की जाँच करूँगा, जो लड़का मेरी जाँच में ठीक होगा, उसी को कारखाने में काम पर लगाऊँगा।"

"यह जो सेठ ने कहा तो सारे लड़के बोल उठे कि हम सब परीक्षा देने को तैयार हैं। सेठ ने लड़कों को तैयार देखा तो बोला, अगर आप लोग परीक्षा के लिये तैयार हैं, तो सुनिये यहाँ से बारह कोस उत्तर की तरफ एक नया नया गाँव बसाया गया है। उसका नाम "मेहनतपुर" है। मेहनतपुर में एक हकीम साहब हैं, उनका नाम हिकमतुल्लाह साहब है। जो लड़का मेहनतपुर जाकर हिकमतुल्लाह साहब से अपनी ईमानदारी और मेहनती होने का प्रमाणपत्र ले आयेगा, मैं उसे काम पर लगा लूँगा।"

सेठ यह कहकर चुप हो गया। निखटू लड़कों ने तो उसी जगह हिम्मत हार दी, आपस में खुसर पुसर करने लगे, "अजी कौन जाये मेहनतपुर, न जाने हकीम हमारे बारे में ईमानदार और मेहनती लिखकर दे, या मना कर दे तो बेकार में परेशान हों, चलो जी खेलें चल के गिल्ली डण्डा" लेकिन कुछ

लड़कों ने इन निखटू लड़कों की बात न सुनी और वे मेहनतपुर की ओर चल दिये।"

इतना कह कर चाचा मियाँ ने सहू मियाँ की ओर देखा, वे अन्नो बी की तरफ मुँह बना रहे थे। चाचा मियाँ ने टोका, "सहू मियाँ यह क्या? सहू मियाँ बोले, "कुछ नहीं चाचा मियाँ! आप पान के लिये छोटी बजिया को पुकारते रहते हैं, और ये उठकर नहीं देती हैं, न ये निखटू?"

सहू मियाँ से यह सुनकर अन्नो कुछ कहने ही वाली थी कि चाचा मियाँ ने खुद जवाब दे दिया, "नहीं भई, अन्नो तो झट पान लाकर मुझे देती है, अच्छा भई खामोश रहो, कहानी सुनो आगे क्या हुआ?"

"हाँ चाचा मियाँ ! फिर क्या हुआ?" हम सबने कहा, और चाचा मियाँ फिर कहानी कहने लगे, फिर हुआ यह कि जो लड़का मेहनतपुर गया, वहाँ से पलट कर न आया।

"अरे क्यों? क्या उन सबको वहाँ? हम सबने एक साथ चाचा मियाँ से पूछा।"

उन्होंने कहा, "सुनते जाओ कहानी, अखबारों में छपा कि जो लड़का मेहनतपुर जाता है वहाँ के लोग उसे मुर्गा बना देते हैं।"

"ऐं! क्या मुर्गा?" अब तो अन्नो को मजा आ गया, सहू

मियाँ की तरफ देख कर मुस्कराई और बोली, अहा मुर्गा कुकडू कूँ—बुद्ध के दिन मुल्ला जी ने—वाह भई वा अलिफ खाली, बे के नीचे एक नुक़ता, ते के ऊपर दो नुक़ते।"

यह पते की बात उस वक़्त जो अन्नो ने कही तो सब हँस पड़े। सहू मियाँ बहुत शर्माए जवाब तो कुछ बन न पड़ा। बस गुस्से में अन्नो की चुटिया पकड़ कर झटक दी। अन्नो चिल्लाई, "अरे मरी मैं।" आखिर चाचा मियाँ ने बीच बचाव करा दिया और फिर कहानी शुरू करने ही वाले थे कि सफ़फ़ो बी ने पूछा, "तो फिर मिठाई का कारखाना चालू हुआ या नहीं?" चाचा मियाँ ने बताया कि नूरपुर के एक लड़के अमानतुल्लाह के द्वारा "अच्छा. ...तो मेहनतपुर वालों ने उसे मुर्गा नहीं बनाया?" हम सबने एक साथ सवाल किया।

चाचा मियाँ बोले, "भई बीच बीच में ज़्यादा सवाल न करो नहीं तो रात भर में कहानी खत्म न होगी, और कहानी कहने में बार बार रुकना पड़ता है तो मजा भी किरकिरा हो जाता है। बस अब न बोलना, चुपके से सुनो, आगे बड़े मजे की है कहानी।"



हृदय रोग “एन्जाइना (Angina)”

(वैद्य वी.एस. पाण्डेय)

डायबिटीज़ के रोगियों में हृदय रोग “एन्जाइना” हृदय की रक्त धमनियों में एकत्र होने के कारण होती है। कोलेस्ट्रॉल के कारण ही “एन्जाइना” होता है जो हार्ट अटैक का कारण होता है। जिन कारणों की वजह से किसी व्यक्ति को कोरोनरी हृदय रोग होता है उनमें डायबिटीज़ का महत्वपूर्ण स्थान है। सबसे बड़ी बात यह है कि हृदय रोगियों के इलाज में उतनी जटिलताएं नहीं हैं जितनी कि डायबिटीज़ और हृदय रोगियों में है।

डायबिटीज़ के मरीजों में हृदय रोग “एन्जाइना” के होने पर यदि समय से इलाज हो गया तो पूरी तरह रोग मुक्त हुआ जा सकता है। हार्ट अटैक से पीड़ित 25 प्रतिशत लोगों में डायबिटीज़ की समस्या होती है।

डायबिटीज़ के मरीजों में हृदय रोग “एन्जाइना” की शिकायत अधिक होती है। डायबिटीज़ से पीड़ित पुरुषों में इस बीमारी का खतरा दो से तीन गुना ज़्यादा होता है जबकि डायबिटीज़ महिलाओं में इसका खतरा तीन से पाँच गुना अधिक

होता है।

डायबिटीज़ के मरीजों में कोलेस्ट्रॉल जमने की गंभीरता अधिक पायी जाती है तथा एक से अधिक धमनियों में बीमारी पाई जाने की संभावना होती है। डायबिटीज़ से पीड़ित हृदय रोग “एन्जाइना” के मरीजों में हृदय से संबंधित खतरा अधिक होता है। इसके अतिरिक्त यदि डायबिटीज़ का रोगी “एन्जाइना” के मरीजों में हृदय से संबंधित खतरा, हार्ट अटैक का खतरा तथा पक्षाघात का खतरा अधिक होता है। इसके अतिरिक्त यदि डायबिटीज़ का रोगी “एन्जाइना” का रोगी है तो दोबारा हार्ट- अटैक का खतरा 1.4 से 3.1 गुना ज़्यादा होता है। इसी प्रकार महिलाओं में इसका खतरा पुरुषों की अपेक्षा दो गुना अधिक होता है। डायबिटीज़ से पीड़ित हृदय रोग “एन्जाइना” के रोगियों के सीने में दर्द नहीं होता है जिसके कारण ऐसे रोगियों में साइलेंट इस्किमिया की संभावनाएं ज़्यादा होती है।

ऐसे रोगियों में सांस फूलने की बीमारी होती है। ऐसे रोगियों की बाईपास सर्जरी सम्भव नहीं है क्योंकि एन्ज्योप्लास्टी तथा सैपेनस गेन ग्राफ़्ट के परिणाम निराशाजनक रहे हैं।

डायबिटीज़ और हृदय रोग “एन्जाइना” के रोगियों में एन्ज्योप्लास्टी के बाद पुनः दुबारा सिकुड़न होने का खतरा 100 प्रतिशत होता है।

डायबिटीज़ एवं हृदय रोग “एन्जाइना” के रोगियों में यदि कई रक्त धमनियों में कोलेस्ट्रॉल के कारण सिकुड़न है तो बाई-पास सर्जरी पहली बात तो सफल नहीं होती है यदि किसी प्रकार बाई-पास सर्जरी हुई तो पुनः सिकुड़न हो जाती है और मरीज गंभीर स्थिति से गुज़रता है। इसलिए जब भी मरीज को डायबिटीज़ हो तो उसे ई.सी.जी. (E.C.G.) या टी.एम.टी. (T.M.T.) अवश्य ही करा लेना चाहिए कि “एन्जाइना” की शिकायत है या नहीं।

❖❖❖

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

अबू अब्दुर्रहमान नदवी

ग्लोबलाइजेशन का प्रभाव:—

ग्लोबलाइजेशन के बाद कई स्तरों पर परिवर्तन हुए हैं यह परिवर्तन देश और समाज के लिए कई मामलों में बेहतर साबित हुए हैं, लेकिन कई मामलों में इससे समाज में कई प्रकार की कठिनाइयाँ और मसाएल बढ़े हैं जोखिम भी बढ़े हैं, नशा खोरी, हिन्सा, आत्म हत्या, यौन संबंधी समस्याएं पिछली तीन दहाइयों में नवजवान वर्ग में बहुत बढ़ गई है। एक सर्वे के आँकड़े के अनुसार देश के 75 प्रतिशत नवजवान 21 साल की उम्र से पहले नशा आवर चीजों का प्रयोग करने लगते हैं, जबकि 88 प्रतिशत 18 साल या उससे कम उम्र के बच्चे अलग-अलग प्रकार का नशा करते हैं, खास तौर से 12-16 साल के बच्चे सिग्रेट, स्मेक और गुटखा जैसी नशीली चीजों का प्रयोग करते हैं इसके लिए वह चोरी और लूट मार जैसे जराएम में लिप्त हो रहे हैं। स्वास्थ्य को अनदेखा करके नवजवान जिस प्रकार बुरी आदतों के शिकार हो रहे हैं उससे आने वाले दिनों में देश के ज्यादातर नवजवान नशे की चपेट में आजाएँ तो कोई आश्चर्य नहीं होगा, नशा केवल स्वास्थ्य ही नहीं खराब कर रहा है बल्कि दौलत, समय की बरबादी के साथ नवजवानों को तनाव, मायूसी और ना उम्मीदी का भी शिकार बना रही है। दिमागी तौर पर टेनशन के हालात इस

तरह उनमें पैदा हो रहे हैं कि वह अपना अच्छा बुरा भी भूल गये हैं।

सर्वे बताते हैं कि नवजवानों में अजीब तरह की नासमझी का इज़ाफ़ा हुआ है। इसका प्रभाव ये हुआ है कि ये आत्म हत्या जैसे खतरनाक क़दम भी उठा लेते हैं।

उनमें नशे की लत का बढ़ते जाना भी एक विशेष कारण है। अध्ययन से पता चला है कि बिना किसी विशेष प्रयास के उन्हें सरलता पूर्वक नशा आवर चीजें मिल जाती हैं। जाएजों से मालूम होता है कि स्कूल, कालेज स्तर पर बच्चों, नवजवानों और लड़कियों को सिग्रेट, तम्बाकू और गुटखा जैसी नशा आवर चीजें आसानी से मिल जाती हैं उससे उनका स्वास्थ प्रभावित होने के साथ साथ शिक्षा पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ा है, बड़ी संख्या में बच्चों नवजवानों और किशोरों की शिक्षा पूरी किए बिना स्कूल छोड़ने का कारण नशा भी है।

एक अनुमान के अनुसार देश में नशे का कारोबार 20 लाख करोण रूपये हर साल होता है, देश की 3 प्रतिशत जनसंख्या बुरी तरह नशे में लिप्त है, पिछले कुछ वर्षों में गुजरात के मन्द्रा बन्द्रगाह से तीन हज़ार किलो से अधिक नशीली चीजें एक्सपोर्ट की गई हैं। दिल्ली और लखनऊ में 322 किलो का एक्सपोर्ट हुआ, पूने, कोटा, बंगलौर और हैदराबाद जैसे उन्नतिशील आई0टी0 नगरों में भी बड़ी संख्या

में विद्यार्थियों में नशे की लत बढ़ रही है। दिल्ली ऐम्स के एक जाएजे के अनुसार 10 से 17 साल के 1.48 करोण बच्चे और नवजवान कोकीन, गांजा, अफ़ीम और शराब प्रयोग कर रहे हैं। ये नशीली चीजें उन्हें आन लाइन और वेब साइटों द्वारा बिला रुकावट प्राप्त हो रही हैं। सर्वे बताते हैं कि पिछले 3 वर्षों में नवजवानों में नशे का रुझान बढ़ा है। नेशनल क्राइम ब्योरे के आँकड़ों के अनुसार पिछले पाँच वर्षों में 20 हज़ार से ज्यादा बच्चे नशे के शिकार हुए हैं, साइकेट्रिक ड्रग की पहुँच छोटे कस्बों और छोटे शहरों में बहुत तेज़ी के साथ बढ़ी है, क़सबों और शहरों में होटल और रेस्टोरेंट मालिक स्टूडेंट और नवजवानों को नशीली चीजें उपलब्ध करा रहे हैं।

प्रश्न यह है कि कैसे इस गम्भीर स्थिति से नवजवान पीढ़ी को बचाया जाए? “थिंक चेंज” संस्था की रिपोर्ट कहती है कि “कोरोना महामारी” के बाद देश में नशीली चीजों की खपत तेज़ी से बढ़ी है” नशीली चीजों की रोकथाम के लिए सरकार के अलावा अवाम को भी आगे आना होगा, उन्हें पुलिस की सहायता करनी होगी और नशे के उन सौदागरों की सूचना पहुँचानी होगी जो करोणों रूपये का कारोबार करते हैं, ज़रूरत है नवजवान पीढ़ी को भी समझाने की। इसमें टीचर समाजी कारकर्ता, रिश्तेदारों और सहकारी ग्रुपों का रोल अहम हो सकता है। ◆◆

नदवतुल उलमा

पोस्ट बाक्स न० 93, टैगोर मार्ग,
लखनऊ -226007 (भारत)



مَدْرَۃُ اَلْعِلْمِ
پوسٹ بکس - ٹیگور مارگ
لکھنؤ - ۲۲۶۰۰۷ (الہند)

दिनांक: 22/02/2026

अहले ख़ैर हज़रात से !

_____ تاریخ

अल्लाह तआला का शुक्र व एहसान है कि दारुल उलूम नदवतुल उलमा, हज़रत मौलाना सैय्यद बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी दामत बरकातुहुम, नाज़िम नदवतुल उलमा की सरपरस्ती में अपनी इल्मी, दीनी, तालीमी व तरबियती ख़िदमत अंज़ाम दे रहा है, और उन बहुमूल्य सिद्धान्तों को सीने से लगाए हुए है जिनके लिए नदवतुल उलमा को स्थापित किया गया था यानी नये ज़माने में इस्लाम की प्रभावी और सही व्याख्या, दीन और दुनिया तथा इल्म और रूहानियत को यकज़ा करने की कोशिश, दीन से दूरी और नफ़रत को ख़त्म करने के प्रयास, इस्लाम पर विश्वास और इस्लामी उलूम की बलन्दी और विशेषता के ऐलान, दीने हक़ से वफ़ादारी और शरीअत पर मज़बूती से जमने के सिद्धान्तों पर कायम है।

आप से हमारी दरख्वास्त है कि वक़्त की इस ज़रूरत और दारुल उलूम नदवतुल उलमा की इफ़ादियत, (उपयोगिता) को समझते हुए पूरी फ़य्याज़ी और फ़राख़दिली और हिम्मत से काम ले कर इन तमाम कामों में भरपूर मदद फ़रमाएं कि हिन्दुस्तान में दीन के किलों की हिफ़ाज़त की इससे बेहतर कोई शक़ल और इससे ज़्यादा मज़बूत कोई सदक-ए-जारिया नहीं।

लिहाज़ा आप हज़रात से गुज़ारिश है कि अपने सदक़ात अतियात, चेक या ड्राफ़्ट के ज़रिये और ऑन लाइन नदवतुल उलमा के निम्नलिखित एकाउन्ट में ट्रान्सफ़र फ़रमायें, ऐसे नाजुक और मुश्किल हालात में आपका सहयोग बहुत ही अहमियत रखता है। अल्लाह तआला हम सबकी कोशिशों को क़बूल फ़रमाए और उनको हमारे लिए आख़िरत का ज़ख़ीरा बनाए। आमीन।

मौलाना सैयद अम्मार अब्दुल अली हसनी नदवी
नाज़िरे अ़ाम नदवतुल उलमा

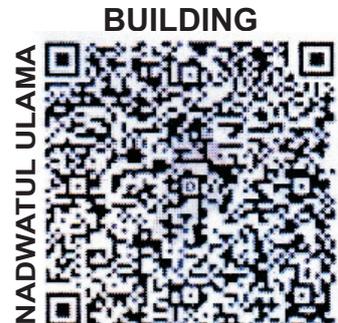
(मौलाना डॉ०) तकीउद्दीन नदवी
मोतमद तालीम नदवतुल उलमा

डॉ० मुहम्मद असलम सिद्दीकी
मोतमद माल नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ०) सर्ईदुर्रहमान आज़मी नदवी
मोहतमिम दारुल उलूम नदवतुल उलमा

SBI MAIN BRANCH, LUCKNOW- IFSC: SBIN000125
ONLINE DONATION LINK: <https://www.nadwa.in/donation>

SCAN HERE TO VISIT THE WEBSITE FOR DONATION



UPI करते समय रिमार्क में मद (ज़कात/अतिया/तज़मीर) अवश्य डालें।

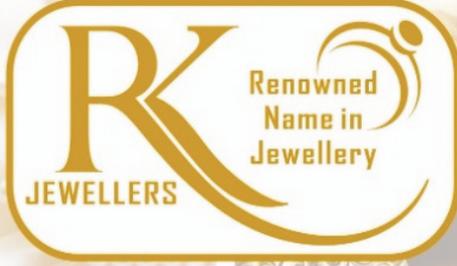
बरा-ए-करम अतियात भेजने के बाद रसीद हासिल करने के लिए नं०08736833376 पर इत्तिला ज़रूर करें।
नोट: नदवतुल उलमा, लखनऊ को दिये गये चन्दे को Section 80G income Tax act 1961के तहत छूट प्राप्त होगी।
Online Donation Link: <https://www.nadwa.in.donation/Website: www.nadwa.in, Email: nizamat@nadwa.in>

RNI No. UPHIN/2002/07945
Regd. No. SSP/LW/NP-491/2024 To 2026
Dispatch Date : 1 & 5
Published of 27th Advance Month
Dispatch: R.M.S Charbagh, Lucknow

MONTHLY
SACHCHA RAHI

Vol. 25 - Issue 01

Whatsapp & Call **9559844716**
Office Timing : 08:00 AM To 1:00PM
ISSN No. : 2582-4007
<http://sachcha-rahi.nadwa.in>
E-mail: sachcharahi2002@gmail.com



Haji Abdul Rauf Khan
Haji Mohd. Faheem Khan
Mohd. Owais Khan



Shop : Sarai Bans, Akbari Gate,
Chowk, Lucknow - 226003
Ph.: 0522-2267910
+91-9415108039



**R. K. CLINIC
& RESEARCH CENTRE**
Dr. Mohammad Fahad Khan

M.D.

विशेषज्ञ

पेट एवं उदर रोग, श्वास एवं चेस्ट रोग, एण्डोक्रायोनोलोजी एवं मधुमेह रोग

24 HOURS EMERGENCY SERVICES AVAILABLE

G-1, Aman Apartments, Chaupatiyan, Opp. Power House, Lucknow
Ph.: 0522-2651950, 9415006983

Printed & Published by Mohammad Taha Athar, Tagore Marg, Badshah Bagh, Lucknow - 7
on behalf of Majlis-e-Sahafat-wa-Nashriyat at Kakori Offset Press, BN Varma Road, Lucknow - 3